ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 20

वर्ष : 31 ज्येष्ठ-आषाढ़ वि0स0 2076 जून 2019 अंक : 6

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून

वजन: 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

With Best Compliments From

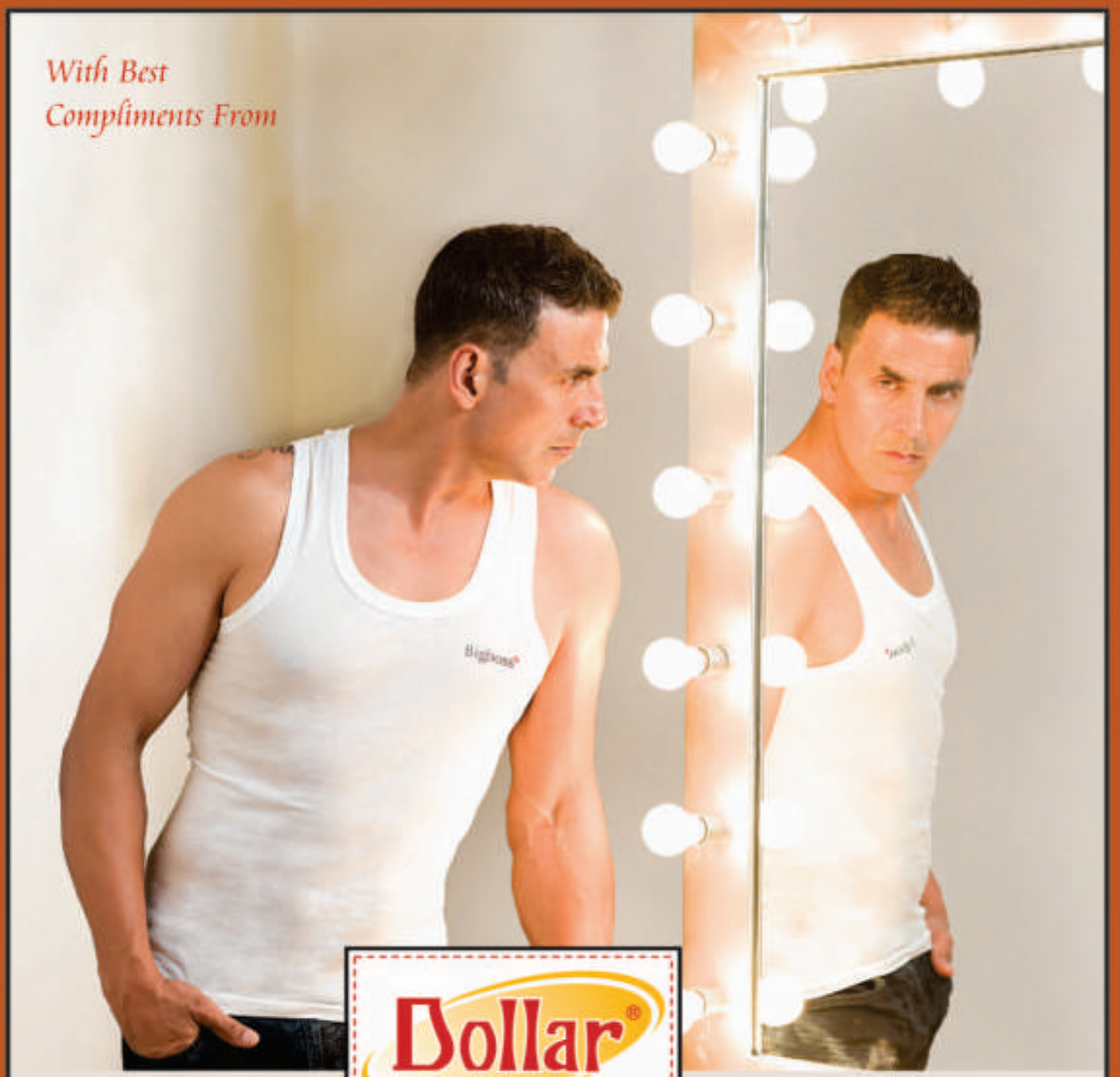

Dollar®

Bigboss®
PREMIUM INNERWEAR

Fit Hai Boss

www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals

Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–31 अंक–6

ज्येष्ठ–आषाढ़ 2076 विक्रमी मई 2019

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120 दयानन्दाब्द : 195

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

मोबाईल : 7310641586 / 7007940598

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
ईश्वरीय ज्ञान है वेद	डॉ कृष्णकांत वैदिक	4
वैदिक धर्म संसार का श्रेष्ठतम मानव धर्म	मनमोहन कुमार आर्य	7
मैडम भीखाजी कामा	स्वामी यतीश्वरानन्द जी	10
आर्य समाज	आर्य रवीन्द्र कुमार जी	12
प्रार्थना वेदरत्न	प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार	13
यतिवर लक्ष्मण का आदर्श	ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी	15
ऋषि के व्यक्तित्व से अंग्रेज भयभीत हुए	प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी	17
स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	मनमोहन कुमार आर्य	19
हमारे हनुमान वेदों के विद्वान्	पंडित वेदप्रकाश शास्त्री	24
धर्म	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	25
मनमोहन आर्य जी का पुणे में सम्मान		27
कब खायें, क्या खायें, कैसे खायें	के.एल. रंगवानी	28
युवाओं हेतु दिव्य जीवन निर्माण शिविर	आचार्य आशीष जी	32

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000 / – प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000 / – प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000 / – प्रति माह

पवमान पत्रिका के रेट्स

1. मासिक मूल्य (1 पत्रिका) — रु. 20 / – एक प्रति
2. वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष) — रु. 200 / – वार्षिक
3. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य — रु. 2000 / –

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

समय की महिमा

समय अत्यन्त मूल्यवान है। धन नष्ट हो जाने पर उसे पुनः परिश्रम से अर्जित किया जा सकता है परन्तु समय रूपी निधि समाप्त हो जाने के बाद पुनः प्राप्त नहीं की जा सकती है। परमात्मा न्यायकारी है, इसलिए उसने यह निधि निर्धन, धनवान्, ज्ञानी सभी को समान रूप से प्रदान की है। समय के चार गुण बताए गये हैं। सूर्य सात रंगों के साथ प्रकाशमान् रहता है। सूर्य की सत्ता संसार में महत्त्वपूर्ण है। इसी प्रकार समय की भी सत्ता है। उसके सैकड़ों नेत्र अथवा धुरे हैं। जैसे नेत्र देखने का काम करते हैं, वैसे ही काल भी हम सबको देख रहा है। जैसे धुरी पर पहिया चलता है वैसे ही समय के सहारे संसार चलता है। समय कभी बूढ़ा नहीं होता है। वह सदा युवा और नवीन रहता है। समय सदा एक समान रहता है। संसार के सभी कार्य देश और काल की सीमा में बंधकर होते हैं। परमात्मा, आत्मा और प्रकृति से भिन्न शेष सभी वस्तुएं काल के बन्धन से बंधी हुई हैं। समय बड़ा शक्तिशाली है, उस पर सवारी ज्ञानवान् और बद्धिमान् लोग ही कर सकते हैं। समय कभी लौट कर वापस नहीं आता है, इसलिए समय पर कार्य न करने वाले व्यक्ति को समय निकल जाने के बाद पश्चाताप के सिवा कुछ नहीं मिलता है। विद्यार्थी जीवन में जो लोग विद्यार्जन से वंचित रह जाते हैं, बाद में जीवन में अवसर न मिल पाने और बुद्धि में ग्रहण करने की शक्ति की कमी हो जाने के कारण वे विद्या के क्षेत्र में प्रगति नहीं कर पाते हैं। इसलिए हमें समय का सदैव सदुपयोग करना चाहिए। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है–''कस्त उषः कध प्रिये भुजे मर्तो अमर्त्ये। कं नक्षसे विभावरि।।'' इसका भावार्थ यह है कि पुरुषार्थ के आरम्भ करने का समय उषाकाल है। एक अन्य वेदमंत्र में कहा गया है कि दिवित्मती देवी कब हमें अपना दिव्य प्रकाश प्राप्त करायेगी?जिस तरह वह हमें समय–समय पर जगाती है, नये–नये ज्ञान–प्रकाश से हमें प्रबुद्ध करती है, उसी तरह वह हमारे जीवन को परम ज्योति से प्रकाशित कर दे। वह उषा हमें समय से अपने आत्मज्ञान के महान् ऐश्वर्य में जगाये, जिसे प्राप्त कर मुक्त जीव निहाल होते रहे हैं। हमें प्रातःकाल उठकर जब तक सोने का समय न हो, एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। मनुष्य समय की सार्थकता को जानते हुए पुरुषार्थ द्वारा अपना समय सुखमय बना सकता है। समय का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति की दिनचर्या नियमित होती है। हमें यदि जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होना है तो समय का उचित प्रबन्धन करना होगा। निश्चित समय पर काम पूर्ण करते रहने से जीवन में सदा सफलताएं प्राप्त होती हैं। वर्तमान काल में ही समय का सदुपयोग करते हुए कार्य पूर्ण करना लाभकारी होता है। कार्य को भविष्य के लिए स्थगित करने की प्रवृत्ति हमारे लिए उचित नहीं है। भविष्य के लिए टालते रहने से कार्य कभी पूर्ण नहीं हो पाता है। जो लोग समय का मान करते हैं, वे इसके सदुपयोग से जीवन में सदैव सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

'जय हो उस परम यशस्वी सम्राट इन्द्र की'

महाँ इन्द्रः परश्च नु, महित्वमस्तु वज्रिणे।
द्यौर्न प्रथिना भावः।। **ऋग्वेद 1.8.5**

ऋषिः मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। देवता इन्द्रः। छन्दः निचृद् गायत्री।

(इन्द्रः) ऐश्वर्यशाली परमेश्वर (महान्) महान् {है}, (च) और (नु) निश्चय ही (परः) सर्वोत्कृष्ट {है} (वज्रिणे) {उस} वज्रधारी का (महित्व) महत्व, जयजयकार (अस्तु) हो। {उसका} (शवः) बल (प्रथिना) विस्तार और यश से (द्यौः न) द्युलोक के समान {है}

भाईयो! क्या तुम विश्व–सम्राट् इन्द्र का परिचय जानना चाहते हो? सुनो, वेद उसका परिचय दे रहा है। इन्द्र महान् है, महामहिम है, इस जगतीतल के बड़े–से–बड़े महिमाशालियों से भी अधिक महिमाशाली है। उसकी महिमा के सम्मुख सूर्य, चांद, सितारे, नदी, पर्वत, सागर, चक्षु, श्रोत्र, वाक्, मन सब तुच्छ हैं। वह 'पर' है, परम है, सर्वोत्कृष्ट है, इसीलिए परमात्मा, परात्मा, परमेश्वर, परमदेव, परात्पर आदि नामों से स्मरण किया जाता है। सर्वोत्कृष्ट होने के कारण ही वह संसार में सबसे अधिक स्पृहणीय है, क्योंकि जो वस्तु जितनी अधिक उत्कृष्ट है, उसे हम उतना ही अधिक पाना चाहते हैं। निकृष्ट या घटिया वस्तु हमारे मन को नहीं भाती। इन्द्र–प्रभु परमोत्कृष्ट होने के कारण हमारा मन–भावन होने योग्य हैं, हमारी अभीप्सा का पात्र होने योग्य हैं।

उसके बल, विस्तार और यश का हम क्या बखान करें। कोई सांसारिक वस्तु उसका उपमान नहीं बन सकती, क्योंकि उपमान उपमेय से उत्कृष्ट हुआ करता है, जबकि संसार की कोई वस्तु किसी गुण में उससे उत्कृष्ट नहीं है। फिर भी परस्पर समझने और समझाने के लिए हम कह सकते हैं कि इन्द्र के बल का विस्तार और यश, द्युलोक के समान है। ज्यों ही हम द्युलोक के बल पर दृष्टि डालते हैं, हमारी आंखे चौंधिया जाती हैं। देखो, द्युलोक के सूर्य को देखो! सूर्य का बल इतना व्यापक है कि उसने ग्रहोपग्रहोंसहित हमारे सारे सौरमण्डल को अपनी आकर्षणशक्तिरूप डोर से बांध रखा है। उसने अपने प्रकाश से सबको प्रकाशित कर रखा है, अन्यथा हमारी भूमि और अन्य ग्रहोपग्रह सब चिर अन्धकार में विलीन हो जाएं। सूर्य तो द्युलोक का एक सदस्यमात्र है। द्युलोक में अन्य अनेक नक्षत्र–पुंज भी हैं, जिनके बल, विस्तार और यश के आगे हमारी बुद्धि चकरा जाती है। वे सब अपने–आप में एक–एक सूर्य हैं और वैज्ञानिकों का कथन है कि उनके भी अपने–अपने ग्रहोपग्रह हैं, जिनका वे संचालन और व्यवस्थापन करते हैं। तो, उस द्युलोक के समान विस्तार्ण एवं यशस्वी इन्द्र का बल है।

वह इन्द्र वज्रधर भी है, पापात्माओं को उनके कर्मों के अनुरूप दण्ड देनेवाला है। यदि हम उसकी दण्ड–शक्ति का मन में ध्यान कर लें, तो जीवन में होनेवाली सब अमर्यादित और अविवेकमय आचरणों से उद्धार पा लें। आओ, महिमागान करें जगत् के उस परम यशस्वी सम्राट् इन्द्र का। आओ, जय–जयकार करें उस वज्रधारी का।

(डॉ० रामनाथ वेदालंकार कृत वेद–मंजरी से साभार)

ईश्वरीय ज्ञान है वेद

—डॉ कृष्णकांत वैदिक

मनुष्य हमेशा यह जानना चाहता है कि उसके लिए कौन सा कार्य उचित है और कौन सा अनुचित। शास्त्रों में धर्माधर्म जानने के लिए अनेक साधन बताए गए है। महाभारत में महर्षि व्यास कहते हैं—

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधर्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेशान्त समाचरेत।।

अर्थात् धर्म का सर्वस्व यह है कि जो व्यवहार तुम्हें अपने लिए बुरा प्रतीत होता है , उसका आचरण दूसरों के लिए मत करो। धर्म का निश्चय करने में यह साधन बहुत सहायक है। शास्त्र ने धर्म को जानने के लिए एक और साधन बताया है अपनी आत्मा की आवाज। आत्मा की आवाज के अनुसार जो कार्य किया जाय वह धर्म होगा। जिन लोगों का आत्मा शुद्ध होता है, वे तो इस साधन से धर्माधर्म का निर्णय कर सकते हैं, परन्तु जिसका आत्मा दब चुका हो ऐसा कसाई जब पशुओं को मारता है तो उसे इस कार्य में पाप लगता है। शास्त्रों में महापुरुषों के आचरण का अनुकरण करना भी धर्म का निश्चय करने का साधन बताया गया है। परन्तु कभी महापुरुषों के आचरण में भी कोई त्रुटि पायी जा सकती है। शास्त्रों में कहा गया है कि स्मृति में बताया गया निर्देश धर्म है, परन्तु स्मृतियां भी देश और काल के अनुसार परिवर्तित होती रहती हैं, इसलिए हमें अन्त में शास्त्र में लिखित यह बात सर्वश्रेष्ठ प्रतीत होती है कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है जो सब देशों और कालों के लिए समान है। वेद की शिक्षाओं पर आचरण करने से मनुष्य का कल्याण होता है। मनु महाराज ने कहा हैः—

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एकचतुविशं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

कुछ लोग यह मानते हैं कि संसार में मनुष्यों के द्वारा निर्मित कोई भी ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान नहीं है। अन्य लोग ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता तो महसूस करते हैं, परन्तु वेद को मान्यता नहीं देते हैं। कुछ अन्य लोग बाइबिल, कुरान आदि को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। पहली श्रेणी के लोगों का मानना है कि सृष्टि के आदि में ज्ञान बहुत कम था। धीरे—धीरे ज्ञान में उन्नति हुई और मनुष्य ज्ञान की इस अवस्था में पहुँच गया। यह क्रमोन्नति या विकासवाद का सिद्धान्त कहलाता है, जो पश्चिमी विचार का सार है। पश्चिम में ही नहीं अपितु अपने देश में भी बहुत से लोग बिना विचार किए इसे स्वीकार करने लगे हैं। वास्तविक तथ्य यह है कि हमारी सभ्यता और पश्चिमी सभ्यता में मौलिक भेद है। हम तो यह मानते हैं कि परमेश्वर ने सारा ज्ञान सृष्टि के आदि में ही दिया, परन्तु विकासवादी इसे न मानकर यह मानते हैं कि मनुष्य शनैः शनैः उन्नति करके इस विकास की अवस्था तक पहुँचा है। विकासवाद के बारे में तीन लोगों के सिद्धान्त प्रमुख रूप से विचारणीय हैं। इनमें सर्वप्रथम लैमार्क का सिद्धान्त है। उनके अनुसार जीवों के वे अंग जो काम में अधिक आते है, बढ़ जाते है और जो काम में नहीं आते, वे निकम्मे हो जाते हैं। इस प्रकार छोटे होते—होते वे सर्वथा उत्पन्न ही नहीं

होते हैं। जिराफ जिसकी ग्रीवा बहुत लम्बी होती है, इसके पूर्वज घोड़े की आकृति के प्राणी थे। लैमार्क का यह वाद बहुत कम समय तक चला।

लैमार्क के बाद डार्विन द्वारा अपना विचार प्रस्तुत किया गया। डार्विन ने लैमार्क का खण्डन किया और कहा कि लैमार्क के ढंग से प्राणी सदा पैदा नहीं हो सकते हैं। यह ठीक है कि किसी अंग के प्रयोग करने व न करने से उस अंग में कुछ अन्तर आ सकता है, परन्तु यह अन्तर अगली पीढ़ी में नहीं जाता है। डार्विन यह युक्ति भी देता है कि सदियों से मुसलमानों और ईसाइयों में सुन्नत होती रही है। शरीर में मांस का कुछ भाग सर्वथा बेकार होता गया है। इस परम्परा के लगभग 2000 साल तक चलने के बाद भी कोई बच्चा ऐसा पैदा नहीं हुआ जिसकी सुन्नत जन्म से ही हो गई हो। डार्विन का विचार है कि संसार में एक संघर्ष जीवित रहने का चल रहा है। इस संघर्ष में जो योग्यतम सिद्ध होता है, उसकी विजय होती है और वह जीवित रहता है, शेष नष्ट हो जाते हैं। इस जीवन संग्राम के लिए जो अंग या जो शक्ति अधिक उपयोगी है, वे प्राणी जीवित रहते हैं। वह शक्ति भी उनमें बढ़ जाती है। इस प्रकार से उन्नत होते–होते वे प्राणी जिनमे ये शक्तियां बहुत अधिक होती जाती हैं, वे प्राणी जीवित रहते हैं और आगे उत्पन्न होते जाते हैं। इसी क्रम से पशु जगत् और बनस्पति जगत् में प्राणी उत्पन्न होते हैं। डार्विन के अनुसार विचार करने पर तो संसार में प्राणियों की संख्या बढ़ जानी चाहिए, परन्तु यह नहीं बढ़ती क्योंकि संसार में खाना सीमित है। प्राणियों की खाना प्राप्त करने की शक्तियां सीमित हैं। गरमी–सरदी सहन करने की शक्तियां सीमित हैं। इनमें शत्रुओं से मुकाबला करने की शक्तियां सीमित हैं। डार्विन के अनुसार जिनमें मुकाबला करने की शक्तियां कम थीं वे जीवन संग्राम में सफल नहीं हुए और जिनमें ये शक्तियां अधिक थीं, वे सफल हो गये। अगले कुल में शक्तियां चली गयीं और बढ़ी शक्ति वाले बच्चे उत्पन्न हुए। शेष मर गए। इस प्रकार से शक्तियां बढ़ती गईं और एक समय आया जब एक नया प्राणी उत्पन्न हो गया जो कि जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करने में अधिक योग्य था। इसको अग्रेजी में– Natural Selection, Suvival of the fittest कहते हैं। इस वाद के अनुसार सब प्राणियों और पशुओं या वृक्षों का पूर्वज एक सेल वाला का अमीबा था। इससे उन्नति होकर चार सेल वाला प्राणी हाइड्रा बना। जिसकी पुनः उन्नति होकर मछली आदि प्राणी बने। अंत में मनुष्य बना।

डार्विन के सिद्धान्त के विरुद्ध तीसरा सिद्धान्त डीव्रीज का था। उसने कहा कि यह ठीक है एक प्राणी शनैः शनैः उन्नति करता है, परन्तु वह विकास के गुण जो उसमें बढ़ते हैं, एक विशेष सीमा तक रहते हैं। उसके बाद या तो विकास रुक जाता है या लौट जाता है। इस शनैः शनैः उन्नति से नये प्राणी उत्पन्न नहीं हो सकते हैं। विकासवाद के खण्डन में बहुत सी युक्तियां हैं, परन्तु स्थानाभाव के कारण यहाँ उनका उल्लेख करना सम्भव नहीं है। विकासवाद का इतना शोर सुनाई पड़ता है, परन्तु इसमें इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया है कि आरम्भ में ज्ञान कहां से आया है। इसका उत्तर यह है कि परमात्मा ने मनुष्य को स्वाभाविक ज्ञान दिया है। कुछ लोग यह कहते

हैं कि इस ज्ञान से मनुष्य सारे काम कर सकता है। वह पुस्तकें भी लिख सकता है। अतः वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानने की क्या आवश्यकता है? यह उक्ति उचित नहीं है क्योंकि उस स्वाभाविक ज्ञान से मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता है। उसका बच्चा जब तक अपने माता–पिता आदि से नहीं सीखता उसे कुछ भी ज्ञान नहीं हो सकता है। अब प्रश्न यह उठता है कि सृष्टि के आदि में मनुष्य को ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ? इसका उत्तर योगदर्शन में इस प्रकार हैः–

स पूर्वेषमपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।। योग0।।

अर्थात् उनका गुरु वही परमात्मा है जिस पर काल का कोई प्रभाव नहीं होता है। वही सृष्टि के आदि में ज्ञान देता है।

इस सम्बन्ध में ऋग्वेद का यह मंत्र भी द्रष्टव्य है–

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयं दधाना।
यदेशां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत् प्रेम्णा तदेशां निहितं गुहादि।।

अर्थात् हे बृहस्पते! नाम रखने की शक्तिवालों ने आदि में जो वाणी का उच्चारण किया, उसमें वह ज्ञान है जो सारे दोषों से शून्य है और सबसे बढ़ कर उत्तम है। वह ऋषियों के प्रेम से प्रकाशित हुआ जो कि पहले गुफा में रक्षित था। मनुष्य बिना सिखाये कोई ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता है तो आदिकाल में बिना ईश्वरीय ज्ञान के यह सब कैसे सम्भव हो गया? संसार की सभी भाषायें ईश्वरीय ज्ञान से ही निकलनी चाहिएं। कुरान, बाइबिल आदि वाणी के मूल होते तो उनसे पहले संसार में कोई भाषा नहीं होनी चाहिए थी। यह बात सर्व सम्मत है कि इनसे पहले भी संसार में अनेक भाषाएं थीं। बाइबिल में कहा गया है कि 'पहले सारी पृथ्वी पर एक ही बोली थी और सब लोग एक ही सम्प्रदाय के थे।' अब प्रश्न उठता है कि वह कौन सी बोली थी और यह सम्प्रदाय कौन सा था? इस विषय में बाइबिल चुप है। इस प्रश्न का उत्तर मनु महाराज ने दिया हैः–

सर्वेशां तु स नामानि कर्माणि पृथक् पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे।।

अर्थात् आदि में सब नाम आदि वेद के शब्दों से रखे गए थे। कई लोग इस बात को भूल कर जब कोई नाम वेद में देखते हैं तो कहते हैं कि वेद में उस नाम के होने से वेद में इतिहास का वर्णन किया गया है। ईश्वरीय ज्ञान भ्रम, प्रमाद और विप्रलिप्सा आदि दोषों से रहित है। वह धर्म की सारी आवश्यकताओं को पूरा करने वाला होता है और लोक व परलोक का मार्ग बताने वाला होता है। वेद में गृहस्थ धर्म के पालन के उपदेश, आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध में और आध्यात्मिक उपदेश हैं। इसमें रोगों की निवृत्ति के लिए उपदेश और औषध का उल्लेख है। अन्य धर्मों के ग्रन्थों में इस प्रकार के पूर्ण उपदेश नहीं हें।

सृष्टि के आदि में यह ज्ञान ऋषियों पर प्रकट होने से पूर्व किसी को भी इस ज्ञान का पता नहीं था। वेद का ज्ञान क्योंकि सृष्टि के आदि में परमेश्वर द्वारा दिया गया। उससे पहले वस्तुतः कोई ज्ञान संसार में नहीं था। उक्त कथनों से यह सिद्ध होता है कि मनुष्य को ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता होती है और परमात्मा सृष्टि के आदि में यह ज्ञान देता है। इसलिए ईश्वरीय ज्ञान है वेद।

वैदिक धर्म संसार का श्रेष्ठतम मानव धर्म

—मनमोहन कुमार आर्य

सभी प्राणी योनियों में मनुष्य योनि श्रेष्ठ है और सभी प्राणियों में मनुष्य सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। मनुष्य ज्ञान अर्जित कर सकता है परन्तु अन्य प्राणी, पशु व पक्षी आदि, ज्ञान प्राप्त कर उसके विश्लेषण द्वारा वह लाभ प्राप्त नहीं कर सकते जो कि मनुष्य करता है। इसलिये मनुष्य श्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। मनुष्य संसार में आया है तो इसका कोई प्रयोजन अवश्य होगा? यह प्रयोजन जानना मनुष्य का पहला कर्तव्य है। उस प्रयोजन को जान लेने के बाद उसे पूरा करना भी मनुष्य का कर्तव्य है। वह प्रयोजन क्या है, इसके लिये हमें वेद व ऋषियों के साहित्य को देखना होगा। वेद व वैदिक साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि मनुष्य के शरीर में एक अनादि, सनातन, चेतन, अल्पज्ञ, ससीम, जन्म–मरण धर्मा, ज्ञान व पुरुषार्थ करने में समर्थ जीवात्मा का वास है। मनुष्य शरीर में आत्मा की सत्ता अनादि सत्ता है, अतः इसके अनेक व असंख्य पूर्वजन्म सिद्ध हो जाते हैं। अनादि व अमर होने से आत्मा के भविष्य में भी असंख्य व अनन्त जन्मों का होना सिद्ध होता है। जीवात्मा का मनुष्य आदि योनियों व शरीरों में जन्म उसके पूर्वजन्मों के शुभ व अशुभ कर्मों के फल भोगने के लिये होता है। यह पूर्ण तर्कसंगत सिद्धान्त है एवं सृष्टि में घट रहे अनेक उदाहरणों से भी यह सिद्धान्त पुष्ट होता है। एक ही माता–पिता के बच्चों में ज्ञान व शक्ति तथा शारीरिक क्षमतायें समान नहीं होती। सभी बच्चों की आत्मायें पृथक पृथक होती हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि पूर्वजन्मों की कर्मों की कुछ समानता से वह एक माता–पिता व परिवार में जन्म तो प्राप्त करने में समर्थ हुए हैं परन्तु उनके कर्मों के अन्तर के कारण उनकी ज्ञान व पुरुषार्थ की क्षमतायें, रंग, रूप, आकृति तथा रूचियां व स्मरण शक्ति आदि में अन्तर देखा जाता है। मनुष्य के जन्म का विश्लेषण करने पर यह भी ज्ञात होता है कि भविष्य में जीवात्मा का इस जन्म के कर्मों के आधार पर पुनर्जन्म होगा। एक स्थिति यह भी बनती है कि मनुष्य कोई अशुभ व पाप कर्म न करे, सभी शुभ व पुण्य कर्म ही करे, ईश्वर व आत्मा विषयक ज्ञान प्राप्त कर सदाचरण का जीवन व्यतीत करे, तो उसका पुनर्जन्म के स्थान पर दुःखरहित मोक्ष भी हो सकता है। मोक्ष की चर्चा शास्त्रों सहित ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास में बहुत उत्तमता से की गई है। इससे सबको अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

धर्म शब्द व इसके अर्थ पर विचार करते हैं। धर्म वह गुण, कर्म व स्वभाव होते हैं जो मनुष्य के धारण योग्य हों। धारण करने योग्य वह गुण हैं जो मनुष्य को पतन से बचाकर उन्नति के पथ पर आरूढ़ करें और

विद्या प्राप्त करवाकर उसके द्वारा उसे दुःख से मुक्त कर इस जन्म की तुलना में भविष्यकाल में अधिक उत्तम मनुष्य जन्म व मुक्ति दिला सके। वेदों में आत्मा की उन्नति के मार्ग व उपाय बताये गये हैं। मनुष्य को क्या धारण करना है, इसका उत्तर है कि मनुष्य को सत्य धर्म को धारण करना है। सत्य धर्म वह है जो मनुष्य का अज्ञान वा अविद्या दूर कर उसे ईश्वर, जीवात्मा, धर्म, मोक्ष के ज्ञान सहित मनुष्य के उत्तम कर्तव्यों का मार्ग बताये। वेद तथा ऋषियों के अनेक ग्रन्थों, उपनिशद एवं दर्शन सहित ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों के अध्ययन से ईश्वर को जाना जा सकता है। आर्यसमाज का दूसरा नियम सूत्ररूप में ईश्वर के स्वरूप व उसके गुण, कर्म व स्वभाव का चित्रण करता है। इस नियम में कहा गया है 'ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।' जीवात्मा के स्वरूप पर विचार करें तो यह सत्य, चेतन, निराकार, अल्पज्ञ, सीमित शक्ति से युक्त, अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अमर, अविनाशी, एकदेशी, ईश्वर से व्याप्य आदि गुणों वाला है। ईश्वर से आत्मा का सम्बन्ध व्याप्य– व्यापक तथा उपास्य–उपासक का है। ईश्वर हमारा माता, पिता, बन्धु, सखा, मित्र, आचार्य, राजा व न्यायाधीश, जन्म–मृत्यु का देने वाला, कर्म–फल दाता, सन्मार्ग का प्रेरक एवं दुःख–निवारक आदि हैं। अतः हमें ईश्वर के स्वरूप व गुणों को जानकर उनका चिन्तन, मनन, ध्यान, धारण, आचरण, प्रचार करने सहित उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना सभी मनुष्यों का कर्तव्य है। ऐसा करने से मनुष्य ईश्वर व जीवात्मा का साक्षात्कार कर सकते है। मनुष्य शुभ–कर्मों सहित उपासना पर जितना अधिक ध्यान देगा, उसे उतना ही अधिक लाभ होगा।

संसार में अनेक मत–मतान्तर प्रचलित हैं परन्तु ईश्वर का सत्य व यथार्थ ज्ञान वेद, वैदिक साहित्य एवं वैदिक धर्म में ही उपलब्ध है। उपासना के लिये भी ऋषि पतंजलि का योगदर्शन एवं ऋषि दयानन्द रचित संन्ध्या व देवयज्ञ की पद्धति हैं। इनका साधनोपाय करने से मनुष्य को जीवन में अनेक लाभ होते हैं। इससे मनुष्य व साधक का ज्ञान बढ़ता है, शरीर स्वस्थ रहता है तथा देश व समाज भी उससे लाभान्वित होते हैं। उपासना की सर्वोत्तम पद्धति वैदिक पद्धति ही है। वेद ईश्वर की वाणी है, उसका उच्चारण करने से व उनके अर्थों के पाठ से ईश्वर से निकटता सम्पादित होती है। अन्य मतों में ऐसा नहीं होता। वेदेतर किसी मत में ईश्वर के स्वरूप का उतना विषद वर्णन व ज्ञान उपलब्ध नहीं होता जितना वेद व ऋषियों सहित आर्य विद्वानों के अनेक ग्रन्थों से होता है। हम समझते हैं कि ईश्वर के स्वरूप तथा उसके गुण, कर्म व स्वभाव का लगभग पूर्ण वा पर्याप्त ज्ञान वैदिक धर्म को जानने व पालन करने से

हो जाता है। देवयज्ञ अग्निहोत्र की लाभकारी विधि का ज्ञान केवल वेदानुयायियों को ही है। उसका क्रियात्मक आचरण भी केवल आर्य वैदिक धर्मी ही विश्व में करते हैं। इससे जो लाभ होता है वह यज्ञ करने से यज्ञकर्ताओं को ही होता है। अन्य मत–मतान्तरों के लोग इससे सर्वथा अनभिज्ञ एवं वंचित हैं। ऋषियों ने शास्त्रों में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म की संज्ञा दी है। यह भी कहा है कि सुख व स्वर्ग की कामना की पूर्ति के लिये यज्ञ ही सबसे मुख्य उपाय है। ऋषियों का विधान है कि सभी मनुष्यों को अपने जीवन की उन्नति के लिये प्रतिदिन प्रातः व सायं गोघृत व साकल्य की न्यूनतम 16 आहुतियां यज्ञाग्नि में देनी चाहिये। ऐसा करके वह पापमुक्त होता है। हमारे निमित्त अर्थात् खान–पान व रहन–सहन से जितना वायु, जल व पर्यावरण प्रदूषण होता है उसी मात्रा में हमें पाप लगता है। यह पाप यज्ञ करने से ही दूर होता है। अग्निहोत्र–यज्ञ वर्तमान समय में केवल ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज के अनुयायी ही करते हैं। इसलिये आर्यों का भविष्य व भावी जीवन यज्ञ के परिणाम से सुखदायक होकर दुःखों से रहित होता है। इन कारणों से वैदिक धर्म ही सभी मत– मतान्तरों की तुलना में श्रेष्ठ व आचरणीय है। हमें वेदों की आत्मा व भावना के अनुरूप आचरण व व्यवहार करना चाहिये। ऐसा करने से हमें इसका लाभ प्राप्त होगा।

वैदिक धर्म में सत्य व्यवहार पर विशेष बल दिया जाता है। अनेक मत ऐसे हैं जहां के मताचार्य सत्य का व्यवहार नहीं करते। वहां दूसरे मतों के प्रति छल व कपट का व्यवहार किया जाता है। अनेक मतों में पशुओं का मांस खाने की प्रेरणा मिलती है व उनके अधिकांश अनुयायी ऐसा करते भी हैं। वैदिक धर्म मांसाहार, अण्डो का सेवन, धूम्रपान, व किसी भी प्रकार के सामिश भोजन का निषेध करता है। वैदिक धर्म में यहां तक विधान है कि हमें अपनी पवित्र कमाई वा साधनों से भोजन प्राप्त करना चाहिये। किसी के प्रति शोषण एवं अन्याय करने की भी वैदिक धर्म में मनाही है। अन्य मतों में, दूसरे मत के लोगों व इतर प्राणियों को पीड़ित व कष्ट देने सहित अनेक प्रकार की हानि पहुंचाने तक का विधान है। कुल मत ऐसे भी हैं जो छद्म व्यवहार कर लोभ व भय से मतान्तरण वा धर्मान्तरण करते हैं। वैदिक मत असत्य मतों के मानने वालों को सत्य का प्रचार कर उनकी शुद्धि करने का विधान करते हैं। ऐसे अनेक कारण बतायें जा सकते हैं जिससे वैदिक धर्म ही संसार का श्रेष्ठ धर्म सिद्ध होता है। वैदिक धर्म को अपनाने से पुनर्जन्म में उन्नति होती है। कुछ मत ऐसे भी हैं जो अज्ञान के कारण पुनर्जन्म को नहीं मानते हैं। अतः ज्ञानी व विवेकी व्यक्ति को वेदाध्ययन करने सहित सत्यार्थप्रकाश का गम्भीरता से अध्ययन कर सत्य को स्वीकार और असत्य का त्याग करना चाहिये। इससे उसे जन्म– जन्मान्तरों में लाभ होगा और हम ईश्वर की व्यवस्था से दुःखों से बच सकेंगे।

मैडम भीखाजी कामा

–स्वामी यतीश्वरानन्द जी

''यह ध्वज भारतवर्ष की स्वतंत्रता का है! साँसे थामिये, यह जन्म ले चुका है। यह उन युवा भारतीयों के रक्त से पवित्र हुआ है जिन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया है। सज्जनों, मैं आपसे भारतीय स्वतंत्रता के इस ध्वज का अभिवादन करने का अनुरोध करती हूँ। इस ध्वज के नाम पर, मैं सारी दुनिया के स्वतन्त्रता प्रेमियों से इस ध्वज के समर्थन की अपील करती हूँ।'' – (स्टुटगार्ट कांफ्रेन्स, 1907 में भाषण)

स्वदेशी वेशभूषा पहने यह भावुक अपील करने वाली मैडम भीखाजी कामा 22 अगस्त 1907 को स्टुटगार्ट जर्मनी में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी कांफ्रेंस को सम्बोधित कर रही थी। जो ध्वज उन्होंने फहराया उसे श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर तथा भीखाजी कामा ने स्वयं तैयार किया था। इस ध्वज में हरी, पीली व लाल पट्टियां क्रमशः इस्लाम, बौद्ध व हिन्दु धर्म का प्रतीक थी। आठ कमल पुष्प भारत के आठ प्रांतो को इंगित करते थे तथा सूरज चाँद हिन्दु व मुस्लिम श्रद्धा को व्यक्त करते थे।

भीखाजी रूस्तम कामा का जन्म भीखाजी सोहराब पटेल के रुप में 24 सितम्बर 1861 को बम्बई के एक प्रसिद्ध और समृद्ध पारसी परिवार में हुआ था। पिता सोहराब जी फ्रामजी पटेल ने वकालत की पढाई की भी तथा वे व्यापार करते थे। माता जैजीबाई भी पढी–लिखी महिला थी। ''एलेक्जेंड्रिया नेटिव गर्ल्स इंग्लिश इन्स्टीट्यूशन'' में पढी भीखाजी मेहनती व अनुशासित छात्रा थी। 03 अगस्त 1885 को चौबीस वर्ष की अवस्था में इनका विवाह प्रसिद्ध विद्वान व समाजसेवी खरशेद जी रुस्तम जी कामा के पुत्र रुस्तम कामा से हुआ जो अंग्रेजी–मिजाज के वकील थे और राजनीति में आने के इच्छुक थे। भीखाजी राष्ट्रभक्त थी अतः पति से वैचारिक मतभेद स्वाभाविक था। भीखाजी अपना अधिकांश समय समाज–सेवा में बिताया करती। जब 1896 के अंत में बम्बई प्रान्त में पहले अकाल व फिर प्लेग फैला तो भीखाजी तन–मन से जरूरतमंदों की सेवा में जुट गई। यहाँ तक कि इन्हें स्वयं भी प्लेग ने जकड लिया और ये बहुत कमजोर हो गई। 1901 में इन्हें चिकित्सकीय देखभाल के लिये ब्रिटेन भेजा गया। ब्रिटेन में भीखाजी श्यामजी कृष्णवर्मा व दादाभाई नैरोजी के सम्पर्क में आई तथा इन्होंने फरवरी 1905 में इण्डियन होम रुल सोसाइटी की स्थापना में सहयोग दिया। जब ये 1908 में भारत लौटने की तैयारी कर रही थी तो ब्रिटिश अधिकारियों ने माँग की कि ये भारत में राष्ट्रवादी गतिविधियों में हिस्सा नहीं लेगी। इन्होंने कागजों पर दस्तखत करने से इन्कार कर दिया। उसी वर्ष ये पेरिस चली गई तथा एक राष्ट्रवादी संगठन ''पेरिस इण्डियन सोसाइटी'' की संस्थापक सदस्य बन गई। तब तक ये 1907 की स्टुटगार्ट कांफ्रेंस के

बाद दुनियाभर के क्रान्तिकारियों में चर्चित हो चुकी थी। ये हॉलैण्ड तथा स्विट्जरलैण्ड में ''वन्दे मातरम्'' तथा ''मदन की तलवार'' (मदन लाल धींगडा के बलिदान से प्रेरित) अखबार छापती तथा वे अखबार चोरी–छुपे फ्रांस, ब्रिटेन, अमेरिका और भारत भेजे जाते। इनके सहयोगी इन्हें भारतीय क्रान्ति की माता व भारतीय राष्ट्रीयता की पुजारिन मानते थे जबकि ब्रिटिश अधिकारी इन्हें ''कुख्यात महिला अराजकतावादी'' कहते थे।

1910 में जब सावरकर ब्रिटिश जहाज से सीवर हॉल में को निकलकर भागे तो भीखाजी उन्हें लेने तट पर आने वाली थी पर कुछ मिनट की देरी से और थोड़ा तय बिन्दु से दूर होने के कारण सावरकर को पुनः गिरफ्तार होना पडा। भीखाजी को इस बात का जीवन भर अफसोस रहा। फिर ब्रिटिश सरकार ने भीखाजी के प्रत्यर्पण की माँग की जिसे फ्रांस ने ठुकरा दिया। इस पर ब्रिटिश सरकार ने भीखाजी की सारी सम्पति जब्त कर ली। बाद में प्रख्यात रुसी क्रान्तिकारी बलादीमीर लेनिन ने भीखाजी को सोवियत संघ में रहने का न्यौता दिया पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया।

भीखाजी पूरी दुनिया में स्त्री–पुरुष की समानता की समर्थक थी। 1910 में काहिरा (मिश्र) में बोलते हुए उन्होंने पूछा–''मुझे केवल आधे मिश्र के प्रतिनिधि दिखाई दे रहे हैं बाकी आधे कहाँ है? मिश्र के पुत्रों! मिश्र की पुत्रियाँ कहाँ हैं? आपकी माताएं व बहने कहाँ है?'' भारतीय महिलाओं के लिये इनका कहना था ''भारतीय स्वतन्त्रता के लिये काम करो, जब देश आजाद होगा तो वोट ही नहीं बाकी सारे अधिकर भी भारतीय महिलाओं को मिलेंगे।'' 1914 में प्रथम विश्व युद्ध शुरु होने पर भी जब पंजाब रेजीमेंट के सैनिक ब्रिटेन की ओर से फ्रांस के मर्सीय नगर पहुंचे तो भीखाजी ने उन्हें ब्रिटेन के विरूद्ध उकसाने का प्रयास किया। इस कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तथा विची नामक नगर में रखा गया। नवम्बर 1917 में इन्हें इस शर्त पर बॉर्डी नगर जाने की इजाजत मिली कि ये प्रति सप्ताह क्षेत्रीय पुलिस को रिपोर्ट करेंगी। युद्ध के बाद ही ये पेरिस में अपने घर ''25 र्‌यू द पोंथ्यू'' लौट सकी। भीखाजी 1935 तक यूरोप में रही। 1934 में गंभीर बीमारी एवं लकवे के कारण ये काफी कमजोर हो गई थी। तब सर कोवास जी जहाँगीर के माध्यम से इन्होंने भारत लौटने के लिये याचिका दायर की। 24 जून 1935 में इन्होंने पेरिस से पत्र लिखकर राजनीतिक गतिविधियों में भाग ना लेना स्वीकार किया (ये तब 74 वर्ष की थी)। ये नवम्बर 1935 में बम्बई आई तथा एक पारसी जनरल हॉस्पिटल में 13 अगस्त 1936 को इनकी मृत्यु हो गई। मृत्यु से पहले इन्होंने अपना अधिकांश धन अनाथ लडकियों के लिये दान कर दिया था। धनी परिवार में जन्म लेने के बावजूद इस साहसी महिला ने राष्ट्रप्रेम और महान संकल्प के बल पर सुखी जीवन को तिलांजलि दी और दुनिया के सबसे ताकतवर साम्राज्यवाद से टकरा गई। देश की आजादी के लिये लम्बा निर्वासन भोगने वाली इस भारतीय क्रान्ति की पुजारिन के हम सब ऋणी हैं।

आर्य समाज

—आर्य रवीन्द्र कुमार जी

वैदिक भाषा—संस्कृत

वैदिक वाङ्मय की भाषा संस्कृत भाषा का जन्म भी सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही हुआ। संस्कृत भाषा में रचित वाङ्मय जैसा विशाल व विपुल साहित्य अन्य किसी भाषा में नहीं है। यही कारण है कि संस्कृत भाषा को अन्य सभी भाषाओं की जननी माना जाता है। संस्कृत भाषा की सम्पूर्ण वर्णमाला, धातु—पाठ, उपसर्ग—प्रत्यय, ३ लिंग, ३ वचन, ८ विभक्ति, सन्धि—कौशल, समास—विन्यास और स्वर—विज्ञान के लिये अद्वितीय व अनुपम है जो अन्य किसी भाषा में नहीं है।

संस्कृत भाषा की मूल लिपि को ब्राह्मी लिपि कहा जाता है जो पूर्ण रूप से वैज्ञानिक एवं उत्कृष्ट है। इस लिपि में जो लिखा जाता है वहीं पढ़ा और बोला जाता है। इस लिपि में १३ स्वर और ३३ व्यजन है। शेष वर्ण संयुक्ताक्षर हैं। यह भाषा जिह्वा, मुख, दांत व तालुका आदि को विभिन्न प्रकार से प्रयोग करने से बोली जाती है। संस्कृत स्वरों के द्वारा अर्थ को निश्चित करती है।

प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान फ्रैंक बोप का मत है कि "At one time Sanskrit was the one language spoken all over the world" अर्थात् ''एक समय में एकमात्र संस्कृत भाषा ही बोली जाती थी।''

अमेरिकी विद्वान ड्यूरेन्ट ने अपनी कृति "The Story of Civilization" में लिखा है—''जैसे भारत ही मानव जाति की माता है वैसे ही संस्कृत विश्व की समस्त भाषाओं की जननी है। संस्कृत ही दर्शनशास्त्र तथा गणित का स्त्रोत है''

प्रसिद्ध विद्वान बुरोन सूवीर ने अपनी रचना Lectures on Natural Science में लिखा है कि—''सर्वज्ञात भाषाओं में से संस्कृत सर्वाधिक नियमित है और विशेषतया इस कारण अद्भुत है कि उसमें यूरोप की भाषाओं तथा प्राचीन भाषाओं—यथा ग्रीक, लेटिन, जर्मन आदि भाषाओं के धातु हैं।''

पाश्चात्य विद्वान व भाषाविद् पिकेट ने अपनी पुस्तक "Origin of Indo-European languages" में लिखा है—संस्कृत सबसे सुन्दर भाषा है और लगभग सभी प्रकार से परिपूर्ण है।''

सर विलियम जोन्स जिन्हें भारतीय तथा संस्कृत वाङ्मय को विकृति रूप में प्रस्तुत करने के लिये दाशी माना जाता है, उन्होंने भी सन् १७८६ में रायल एशियेटिक सोसाइटी के अधिवेशन में स्वीकार किया था कि—''संस्कृत भाषा कितनी भी प्राचीन क्यों न हो, उसका गठन अद्भुत है। यह ग्रीक भाषा से अधिक निर्दोष, लेटिन से अधिक समृद्ध और दोनों से अधिक उत्कृष्ट व परिमार्जित है। इसके बावजूद धातुओं और व्याकरणिक रूपों में संस्कृत भाषा ग्रीक व लेटिन से इतना प्रगाढ़ संबन्ध रखती है कि यह संयोग नहीं माना जा सकता कि कोई भाषाविद् किसी एक स्त्रोत से उत्पन्न माने बिना नहीं रह सकता।''

प्रार्थना

–वेदरत्न प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार

ओ३म् पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनवो धिया।
पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमानः पुनातु मा।।

अथर्व0 ६. १९. १

अन्वयः **देवजनाः मा पुनन्तु। मानवः धिया पुनन्तु। विश्वा भूतानि पुनन्तु। पवमानः मा पुनातु।**

अन्वयार्थः– (देवजनाः मा पुनन्तु) देवजन मुझे पवित्र करें। (मनवः धिया पुनन्तु) मननशील मनुष्य बुद्धि और कर्म से मुझे पवित्र करें। (विश्वा–विश्वानि भूतानि पुनन्तु) समस्त भूत अर्थात् समस्त प्राणी मुझे पवित्र करें। (पवमानः मा पुनातु) पवित्र करने वाला परम पवित्र परमेश्वर मुझे पवित्र करे।

हे पावन परमेश्वर! मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि इस जगत् में जो देव हैं, जो दिव्यजन हैं, जो दिव्य गुण–कर्म–स्वभाव से सम्पन्न जन हैं, जो दानी हैं, जो ज्ञानी हैं, जो धर्मात्मा हैं, जो महात्मा हैं, जो पुण्यात्मा हैं, जो पवित्रात्मा हैं, वे मुझे पवित्र करें।

हे जगदीश्वर! मैं ऐसा सुपात्र बनूँ कि उन देवों का स्नेह, सहानुभूति, शुभचिन्तन और अशीर्वाद मुझे सहज ही मिलता रहे ताकि मैं पवित्र होता रहूँ। उन का आदेश, उन का सन्देश, उन का उपदेश भी मुझे सतत् मिलता रहे ताकि मैं पवित्र होता रहूँ। इतना ही नहीं उन का दिव्य आदर्श जीवन भी सदा मेरे सन्मुख बना रहे जिस से मुझे ज्ञात होता रहे कि वे कब उठते हैं, कैसे उठते हैं, कब सोते हैं, कैसे सोते हैं, कब खाते हैं, कैसे खाते हैं, क्या खाते हैं, कितना खाते हैं, कब बोलते हैं, कैसे बोलते हैं, क्या बोलते हैं, कितना बोलते हैं, कब हंसते हैं, कैसे हंसते हैं, कब रोते हैं, कैसे रोते हैं, कितना रोते हैं, किसको स्मरण करते हैं, कब स्मरण करते हैं, कितना स्मरण करते हैं, किसको भूलते हैं, कैसे भूलते हैं, कितना भूलते हैं, क्यों भूलते हैं, कब चलते हैं, कहाँ चलते हैं, क्यों चलते हैं, इत्यादि, ताकि उन्हीं के अनुसार मैं भी आहार–व्यवहार करके पवित्र हो सकूँ।

हे ईश! जो मननशील हैं, जो विचारशील हैं, जो विवेकशील हैं, जो समझदार हैं, जो बुद्धिमान हैं, जो अपना प्रत्येक कार्य चाहे वह खाने का हो, लिखने का हो, पढ़ने का हो, देने का हो, लेने का हो, कहीं जाने का हो, बोलने का हो, मौन रहने का हो, कहीं ठहरने का हो या विदा होने का हो इत्यादि सब सोच–विचार कर करते हैं। तभी तो ऐसे बुद्धिमान विचारशील जनों के सब कार्य बड़े पवित्र होते हैं, सुखदायी होते हैं, शान्तिप्रद होते हैं, आनन्दप्रद होते हैं,। हे जगदीश! बुद्धिमान् जन मुझे भी बुद्धि और कर्म से पवित्र करें अर्थात् मुझे अपने जीवन के अनुरुप बुद्धिमान् बनायें ताकि मेरे हाथों से भी फिर सदा पवित्र ही कर्म होते रहें, उत्तम ही कर्म होते रहें।

हे प्रभो! समस्त प्राणी मुझे पवित्र करें। मैं इन सब प्राणियों से जिस प्रकार से स्नेह, सहानुभूति, सहायता और सम्मान की कामना करता हूँ वैसा ही स्नेह, सहानुभूति, सहायता और सम्मान मैं निःस्वार्थ भाव से इन सब को देता रहूँ ताकि इस प्रकार मैं सदा पवित्र बना रह सकूँ।

हे पतितपावन! हे पतितोद्वारक! हे लोक परलोक संवारक! हे परम पवित्र प्रभो! मैंने सुना है और मेरे हृदय ने भी अनुभव किया है कि तू स्वयं पवित्र है, सब प्रकार से शुद्ध पवित्र है। इसलिए जो तेरी शरण में आता है, जो तेरे द्वार पर बड़ी आशा और विश्वास से अलख जगा देता है, फिर वह कितना भी पवित्र क्यों न हों, कितना भी अधम क्यों न हो, कितना भी अपवित्र क्यों न हो, तू उसको उठा ही देता है, तू उसका उद्धार कर ही देता है, तू उसको ऊँचा बना ही देता है, तू उसे पवित्र कर ही देता है।

हे कण–कण में बसने वाले विभो! मैं बड़ी श्रद्धा और विश्वास के साथ, बडी आशा और निष्ठा के साथ अन्त में तेरे द्वार पर आया हूँ ताकि मैं सब प्रकार से शुद्ध–पवित्र बन सकूँ निर्मल–निःस्वार्थ बन सकूँ। नाथ! मुझे निराश न करना, यदि तेरे दर से भी मैं निराश गया तो तब मैं कहीं का न रहूँगा। अतः तू कृपा करके सब प्रकार से मुझे पवित्र बनाकर अपने अनुपम प्यार और आशीर्वाद का पात्र बना।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म्।।

ईश्वर–प्रणिधान

नन्हा बच्चा नन्हेपन में कुछ नहीं मांगता। माता अपने आप उसकी सब संभाल लेती है। जब बड़ा होता है फिर मांगता है, इच्छा करता है तब उसे मिलता है। बिना मांगे नहीं मिलत–पर भक्त का–योगी का, इससे उल्टा है। पहले वह कामना करता रहता है, प्रभु से मांगता है, बल, बुद्धि, शक्ति, ज्ञान, भक्ति, पर पीछे बे–मांग हो जाता है, निःसंकल्प बन जाता है। तब परमात्मा उसे अपने आप सब कुछ देते और पहुचां देते हैं। अर्थात् अन्त में योगी या भक्त की वह स्थिति होती है जो प्रारम्भ में निरीह शिशु की। इसलिए शिशु बनने पर ही मनुष्य को सब वस्तुओं का अधिकार मिल जाता है।

–महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

यतिवर लक्ष्मण का आदर्श

–ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी

भूषणों को देख कर राम का हृदय शोक–व्यथा से उमड़ आया। मन को रोक कर वह लक्ष्मण से बोले, देखो लक्ष्मण! क्या यह तुम्हारी भाबज के ही भूषण है?

श्रीराम जी भूषण लक्ष्मण को दिखाते जाते थे परन्तु लक्ष्मण हाथ, कण्ठ तथा शिर के भूषणों को देखकर बोले, ''भ्रातः! मैं इनको नहीं पहिचान सकता पर जब पाँव के नुपुर देखे, तब वह झट बोल उठे कि हाँ आर्य! यह सीता देवी के ही भूषण हैं। सुग्रीव आदिकों ने अचम्भित होकर पूछा कि लक्ष्मण! जब तुम्हें सीता के पास रहते इतना लम्बा काल हो गया है, तो तुम उसके भूषणों को क्यों नहीं पहिचान सके ? किन्तु केवल नुपुर कैसे पहचान लिये ? इस पर लक्ष्मण बोले, मित्र! मैं कुण्डल केयूर और हारादि को इसलिये नहीं पहिचान सकता कि मैंने कभी सीता देवी को ऊँची दृष्टि से नहीं देखा। मैं केवल पाँवों को ही चरण–वन्दना के समय देखता था–

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वाभिजानामि नित्यं पादाभिवंदनात्।।६।२२।

राम सीता के दुःख का स्मरण करते हुए अधीर से हो गये और नाना विधि वाक्यों से शोक प्रकाशित करने लगे। राम को धैर्य देते हुए महावीर हनुमान प्रेरित सुग्रीव ने कहा, ''राम! शोक मत करें, मैं सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ कि जानकी का शीघ्र ही पता लग जायेगा। मुझे भी आपकी भांति स्त्री–वियोग का दुःख है, पर मैं न शोक करता हूँ, न धैर्य छोड़ता हूँ। जब मुझ जैसा साधारण मनुष्य शोक नहीं करता तो आप महात्मा होकर शोक क्यों करते हौ ?

व्यसने वार्थकृच्छेवा भये वा जीवितान्तके।
विमृशन् वैस्वया बुद्ध या धृतिमान्नावसीदति।।कि0 ७।६।।

ये शोक मनुवर्तन्ते न तेशां विद्यते सुखम्।
तेजश्च क्षीयन्ते तेशां न त्वं शोचितु मर्हसि।।सर्ग ७।१२।।

''हे राम! धृतिमान् पुरुष व्यसन में, भारी कष्ट में, धन के नाश में तथा जीवनान्त में भी विचार करते हैं, शोक नहीं करते। जो शोक करते हैं उनका सुख नष्ट हो जाता है, तेज हीन हो जाता है और बहुधा जीवन में भी सन्देह हो जाता है। हे राजेन्द्र! आप शोक त्याग कर धैर्य का आश्रय लें।''

हनुमान द्वारा सुग्रीव का राज्यभिषेक

बाली वध और अन्त्येष्टि संस्कार के पीछे राष्ट्र को बिना राजा के जान, राजा के अभिषेक की तैयारी की गई। राजतिलक के योग्य औषधि, भूषण, वस्त्र आदि तैयार कर लेने के पश्चात् हनुमान् श्रीराम के पास जाकर बोले, महाराज! आप किष्किन्धा में चलकर अपने हाथ से अपने मित्र को अभिषेक दीजिये क्योंकि बिना राजा के प्रजा का कल्याण नहीं हो सकता। राज्याभिषेक की सब सामग्री तैयार है।

यह सुनकर राम ने कहा, हनुमान! मैं तुम्हारे स्नेह व आदर से प्रसन्न हूँ पर मुझे १४ वर्ष पर्यन्त किसी नगर में प्रवेश नहीं करना है, इसलिये तुम्हीं राजविधि से सुग्रीव को तिलक लगा दो। राज्य पर वास्तव में अधिकार तो अंगद का है, परन्तु वह अभी बालक है और इस समय राज्य–भार नहीं उठा सकता। इसलिये आगे को युवराज का पद अंगद को दे दो। पश्चात्–

स्नातोऽयं विविधैर्गन्धैरौशधैश्व यथाविधि ।।२६।६।
तस्य पांडुरमाजह्रश्छत्रं हेमपरिश्कृतम् ।।२६।२३।

शुक्ले च बालच्यजने हेमदण्डे यशस्करे।
तथा रत्नानि सर्वाणि सर्वबीजौशधानि च ।।२६।२४।

सक्षीराणां च वृक्षाणां प्ररोहान्कुसुमानि च।
शुक्लानि चैव वस्त्राणि श्वेतं चंवानुलेपनम् ।।२६।२५।

सुगन्धानि च माल्यानि स्थलजान्यंबुजानि च।
चन्दनानि च दिव्यानि गन्धांश्च विविधान्बहून् ।२६।२६।

अक्षतं जातरूपं च प्रियंगु मधु सर्पिशी।
दधि चर्म च वैयाघ्नं पराध्यौ चाप्युपानहौ ।।२६।२७।

समालं भदमादाय गोरोचनं मनः शिलाम्।
आजग्मुस्तत्र मुदिता वराकन्याश्चशोडश ।।२६।२८।

ततस्ते वानरश्रेश्ठमभिशेक्तुं यथाविधि।
रत्नैवैस्त्रैश्य भक्ष्यैश्च तोशयित्वा द्विजर्शभान् ।।२६।२६।

ततः कुशपरिस्तीर्ण समिद्धं जातवेदसम्।
मंत्रपूतेन हविशा हुत्वा मन्त्रविदो जना ।२६।३०।

राम की आज्ञा पाकर सुग्रीव को सर्वौषधि के शुद्ध जल से स्नान करा कर सारी प्रजा की सम्मति से हनुमान ने सुग्रीव को राजसिंहासन पर और वीर अंगद को युवराज के आसन पर बिठा दिया। राज्याभिषेक के समय महात्मा सुग्रीव पर रत्न जटित सोने का छत्र सफेद बालों के नर्म और मन्द वायु देने वाले चाँदी के दो पंखे, यशकारी सुवर्ण के दण्ड शोभा दे रहे थे। सब प्रकार के रत्न, सब जीवनीय औषधों के सत्व, सुन्दर वृक्षों व लताओं की पत्तियें, सुगन्धित और मनोहर कुसुम, शुक्ल वस्त्र, सफेद चन्दन और कपूर का लेपन, सुन्दर गन्ध वाली पुष्प मालायें, जल और स्थल में पैदा होने वाले पदार्थ, दिव्य चन्दन, बहुविधि सुगन्धियें, अक्षत, जागरुप प्रियंगु सहित घृत, दधि, व्याघ्रचर्म, उत्तम उपानह (जूते), गोरीचन, मन–शिला, भक्ष्य भोज्य, रत्न, वस्त्र, फल, कन्द, मूल, धन और धान्य उस समय उपस्थित किये गये थे।

सबसे प्रथम वेदवेत्ता ब्राह्मणों की पूजा कर उन्हें ऋत्विक्, अध्वर्यु, होता तथा ब्रह्मा के आसन पर बैठाया गया। फिर सुन्दर समिधाओं से अग्निकुण्ड में अग्नि को प्रज्वलित कर, वेद मन्त्रों से पवित्र हवि और विधि से वेदज्ञ ब्राह्मणों द्वारा हवन कराया गया तथा राजा प्रजा के लिये शान्ति की प्रार्थना की गई।

अग्निहोत्र के पीछे सोने के सुन्दर सिंहासन पर महाराजा सुग्रीव को पूर्वाभिमुख बैठाकर, सब मन्त्रि गणों ने राजा के महत्व को पढ़कर, पूरी विधि से गज, गवाक्ष, गवय, शरभ, गन्धमादन, हनुमान और जाम्बवान् के द्वारा प्रसन्न चित्त होकर राजतिलक किया। तिलक के पीछे महावीर हनुमान की व्यवस्था के अनुसार मन्त्रि–मण्डल तथा प्रजा के प्रतिनिधियों से राजा को प्रणाम किया तथा राजकीय आज्ञा मानते एवं शासन में राजा को सब प्रकार की सहायता देने की प्रतिज्ञा की।

ऋषि के व्यक्तित्व से अंग्रेज भयभीत हुए

—प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी

ऋषि दयानन्द के एक जीवनी लेखक मेहता राधाकिशनजी (जिन्होंने ऋषि के उपदेशामृत का लाहौर में पान किया था) ने अपने द्वारा लिखित बृहत ऋषि—जीवन में लिखा है कि जब ऋषि पंजाब पधारे थे तो उनका कड़ा विरोध किया गया। विरोधियों ने उनका विरोध करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। ऋषि का प्रभाव इतना विरोध होने पर भी बढ़ता ही गया। यह देखकर अंग्रेज बड़ा चकित व शंकित था। अमृतसर के अंग्रेज जिला पुलिस अधीक्षक मिस्टर बारबर्टन ने सब थानों में एक विज्ञप्ति भेजकर पुलिस विभाग को यह पता लगाने का निर्देश दिया कि महर्षि दयानन्द के विचारों को मानने वाले कितने लोग आपके क्षेत्र में हैं? इस प्रकार की एक विज्ञप्ति थाना मजीठा के थानेदार ने लाला दसौंधीमलजी ओवरसियर कोठी मज्जुपुरा को उन्हीं दिनों दिखाई। लाला दसौंधीमलजी मेहता राधाकिशन के सगे मामा थे।

अंग्रेज जाति की दूरदर्शिता व चौकसी की प्रशंसा किये बिना हम नहीं रह सकते। इसके साथ ही लाला लाजपतरायजी का यह मत भी यहाँ दे देना समुचित होगा कि आर्यसमाज के सुदृढ़, सिद्धान्त निष्ठ तेजस्वी संगठन को छिन्न—भिन्न करने के लिए सरकार ने इसमें अपने व्यक्तियों को घुसेड़ा। इन्हीं घुसपैठियों ने पंजाब के आर्यसमाज में फूट डालने में सफलता प्राप्त की। रायबहादुर मूलराज एक उच्च सरकारी आधिकारी द्वारा विदेशी सरकार ने ऋषि के मिशन पर घात लगाकर वार किया। सरकार की दमन नीति का तो आर्यों ने वीरतापूर्वक सामना किया परन्तु फूट तो फूट ही होती है। इससे आर्यसमाज की जो क्षति हुई उसे कौन बताये?

उनका अखण्ड ब्रह्मचर्य—पवित्र चरित्र

मेहता राधाकिशन ने अपने ग्रन्थ में लिखा है, ''स्त्रियों को अपने पास कदापि आने की अनुमति नहीं देते थे और यह कहा करते थे कि ये ब्रह्मचारी की आँख में घुस जाया करती हैं। एक बार एक मुसलमान वकील ने वार्तालाप करते हुए आपसे पूछा, ''क्या कारण है कि भले परिवारों की स्त्रियाँ वेश्यायें बन जाती है?''

इसपर आपने उत्तर दिया, ''हमें ऐसी भड़वापन की बातें नहीं भातीं। किसी और से यह पूछिये।''

परोपकारिणी सभा के प्रथम अधिवेशन से लौटते हुए पंजाब के लोग मथुरा में भी कुछ समय के लिए ठहरे थे। पण्डे इनके पास आ गये और ऋषि की शान में बुरा भला कहने लगे। ये लोग दिल लगी के लिए यह तमाशा देखते रहे। लाला सईंदासजी ने पण्डों से पूछा, ''भैय्या दयानन्द यहाँ बहुत देर तक रहा। उसने कोई लुगाई (स्त्री) भी तो रखी होगी?''

यह सुनते ही सब पण्डे एक स्वर से कानों पर अपने दोनों हाथ धरकर बोल उठे, ''महाराज! यह बात उसमें नहीं थी।''

उनकी कुन्दन काया कैसी थी?

मेहता राधाकिशनजी ने लिखा है, स्वामी दयानन्द का शरीर छह फुट से कुछ लम्बा था। उनका गात बलवान् व गठीला था। शरीर लम्बा व समन्वित था। लाहौर में पादरी फोरमैन को सबसे लम्बा व्यक्ति समझा जाता था। एक दिन ऋषि दयानन्द डा0 रहीम खाँ की कोठी से अनारकली समाज में सायंकाल के समय व्याख्यान देने जा रहे थे कि मैं भी (राधाकिशनजी)

साथ हो लिया। सामने से पादरी फोरमैनजी आ रहे थे कि साथ चल रहे एक सज्जन ने कहा, स्वामीजी फोरमैन साहेब आपको सुनने के लिए आ रहे हैं। दोनों की भेंट वर्तमान केसरी सोडा वाटर की दुकान के पास हो गई।

पादरी महोदय ने टोपी उतारकर अभिवादन किया और एक दूसरे का कुशलक्षेम पूछा। मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही जब देखा कि पादरीजी का सिर ऋषि के कंधों तक था।

मेहताजी ऋषि के बारे में ये बातें लिखते हैं–

1. वे अपने बाल सदा मुण्डवाकर रखते थे।
2. एकान्त में अपने तन पर एक चादर ओढ़े रखते थे।
3. धोती उनके शरीर के निचले भाग का वेश था।
4. प्रायः फर्श पर बैठना उन्हें अच्छा लगता था।
5. मुखमण्डल से गम्भीरता टपकती थी। मुखड़ा कुछ खुला (गोल–गोल) था। आवाज सुरीली, उच्चारण शुद्ध, स्वर स्पष्ट, व्याख्यान शैली ऊँची आवाज में परन्तु धीरे–धीरे और प्रभावशाली ढंग से धाराप्रवाह बोलते थे। युक्तियाँ आकाट्य होती थी।
6. असाधारण स्मृति थी। सैकड़ों पुस्तकों के प्रमाण उनको कण्ठस्थ थे।
7. विरोधियों के क्रोध से उत्तेजित नहीं होते थे।
8. वर्णन शैली श्रोताओं को स्वतः ही बाँधकर रख देती थी।
9. विचारों की अभिव्यक्ति में गम्भीरता व उत्साह टपकता था।
10. मेल मिलाप में शालीनता और सब कामों में फुर्ति व नियमबद्धता थी।
11. बहुत मान सम्मान पाकर भी उनकी वेशभूषा सादा थी।
12. जब उनकी आवाज चरमोत्कर्ष पर पहुँचती थी तो भवनों के पुराने गुम्बदों में गूंजती थी।
13. जूते की बजाय प्रायः–खड़ाऊँ पहनते थे।

यहाँ यह स्मरण रहे कि ब्यावर (राजस्थान) के पुराने लोग सुनाया करते थे कि ऋषि के व्याख्यान देने के स्थान से थोड़ी दूरी पर एक जैन मन्दिर में उनके प्रचार के समय घण्टे घड़ियाल बजा करते थे। इतने पर भी उस युग में जब लाऊड स्पीकर नहीं थे, ऋषि के मेघ गम्भीर स्वर में उनका सिंहनाद स्पष्ट सुनाई देता था।

उनका व्याख्यान सुनकर

लाहौर आर्यसमाज के पुराने प्रधान लाला साईंदास सुनाया करते थे कि एकबार ऋषि दयानन्द जी ने ''ईश्वर व उसकी उपासना'' विषय पर लाहौर में एक अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण व विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया। आपने इस व्याख्यान में ईश्वरेतर जड़ वस्तुओं–जल स्थल सबकी पूजा की हानियाँ बताते हुए मुर्तिपूजा का प्रबल युक्तियों से खण्डन किया। सुननेवालों पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

व्याख्यान सुनकर जब श्रोता जा रहे थे तो सबकी जिह्वा पर इस व्याख्यान की चर्चा थी। तब ब्रह्मसमाज के एक नेता ने लाला साईंदास जी से कहा, मेरा तो सारा पिछला जीवन ही बेकार गया। क्यों?इसलिए कि मैंने कभी भी इतना खुलकर मुर्तिपूजा का खण्डन नहीं किया।

लाला साईंदास से सुनी हुई यह घटना बताते हुए महात्मा हंसराजजी ने उस ब्रह्मसमाजी नेता का नाम नहीं बताया। हम अनुमान प्रमाण से ऐसा कह सकते हैं कि ये शब्द लाला काशीरामजी प्रधान ब्रह्मसमाज के हो सकते हैं। लाला काशीरामजी पं0 लेखरामजी के बहुत प्रेमी मित्र थे और ऋषि दयानन्द के बड़े प्रशंसक थे। लेखक ने यह घटना ''महात्मा हंसराज ग्रंथावलि'' के किसी भाग में दी है। इससे पता चलता है कि विचार भेद रखते हुए भी अन्य मतवाले भी ऋषि के एकेश्वरवाद से बहुत प्रभावित थे।

संघर्ष एवं विद्वता से युक्त महनीय जीवन स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

—मनमोहन कुमार आर्य

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी आर्यसमाज वा वैदिक धर्म के एक ऐसी मनीषी संन्यासी थे जिन्होंने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के किसी बड़े पद पर न होते हुए भी समाज को अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान किया एवं वैदिक साहित्य के प्रणयन के क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य किया। उनका जीवन न केवल साधारण अपितु आर्य जगत के सभी नेताओं, विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के लिए अनुकरणीय हैं। उनके जीवन द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण ही आर्यसमाज की खोई प्रतिष्ठा को प्राप्त कर विनाश से बचा सकता है।

स्वामी जी का संन्यास ग्रहण करने से पूर्व का नाम पं0 लक्ष्मीदत्त दीक्षित था। उनका जन्म 20 अगस्त सन् 1914 को उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के एक गांव अस्करीपुर में पं. केदारनाथ दीक्षित के यहां हुआ था। स्वामी जी के पिता पं0 केदारनाथ दीक्षित आर्यसमाज के प्रमुख संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी के व्याख्यानों से प्रभावित होकर आर्यसमाजी बने थे। स्वामी विद्यानन्द जी के जन्म के समय वह आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब के अन्तर्गत लाहौर में उपदेशक का कार्य कर रहे थे। कुछ वर्ष उपदेशक का कार्य करने के पश्चात डी.ए.वी. हाई स्कूल, होशियारपुर में संस्कृत अध्यापक के रूप में उनकी नियुक्ति हो गयी। सेवा निवृत्ति तक वे इसी विद्यालय में कार्य करते रहे और आर्यसमाज के कार्यों में भी निरन्तर समर्पित भाव से संलग्न रहे।

बाल्यकाल में ही स्वामी विद्यानन्द जी ने किसी के कहे बिना अपनी गांव की दीवारों पर ''वेद पढ़ो, आर्य बनों'' लिख दिया था। इन दिनों वे दूसरी कक्षा में पढ़ते थे। जीवन में यह उनका पहला वेद–प्रचार का कार्य था। उनकी शिक्षा होशियारपुर तथा लाहौर के डी.ए.वी. कालेजों में हुई थी। आर्य युवक समाज, होशियारपुर के वे एक प्रमुख घटक एवं प्राण थे। यौवनावस्था, आर्यत्व में दृढ़ता एवं सामाजिक कार्यों में लगन के कारण उन्हें युवक समाज के नाम से पुकारा जाने लगा था।

21 अप्रैल, 1934 को स्वामी विद्यानन्द जी के पिता श्री केदारनाथ दीक्षित डी.ए.वी. हाई स्कूल, होशियारपुर से सेवानिवृत्त हुए। उनके स्थान पर विद्यानन्द जी को स्कूल में संस्कृत अध्यापक के पद पर नियुक्त किया गया। इसके अगले सप्ताह आर्य समाज होशियारपुर का निर्वाचन होना था। विद्यानन्द को निर्वाचन के दिन ही सदस्य बना कर आर्य सभासद घोषित किया गया और आर्यसमाज को आगे बढ़ाने के लिए उपमंत्री निर्वाचित किया गया।

सन् 1935 में गांधी जी लाहौर गए और वहां लाजपतराय भवन में ठहरे थे। विद्यानन्द जी ने उनसे भेंट हेतु समय मांगा था। इस भेंट में आपने हरिजन शब्द की चर्चा कर गांधी जी को कहा था कि कालान्तर में यह शब्द एक नई जाति बनकर समस्याएं खड़ी करेगा। इस भेंट में आर्यसमाज के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान पं0 बुद्धदेव विद्यालंकार

जो बाद में स्वामी समर्पणानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हुए, स्वामी विद्यानन्द जी के साथ थे।

सन् 1935 में ही स्वामी विद्यानन्द जी ने लाला देवीचन्द्र द्वारा होशियारपुर में स्थापित दयानन्द सालवेशन मिशन के अन्तर्गत बढ़–चढ़ कर शुद्धि का कार्य किया जिसकी प्रेरणा उन्हें अपने पिता प0 केदारनाथ दीक्षित द्वारा सन् 1923 में महात्मा हंसराज जी के नेतृत्व में शुद्धि कार्यों से मिली थी। जिन दो बड़े प्रसिद्ध व्यक्तियों को उन्होंने शुद्ध किया था, उनमें से एक खान अब्दुल गफ्फार खां के चचेरे भाई थे जिनका नया नाम धर्मसिंह रखा गया था। बिड़ला जी ने उनके पुत्रों को नौकरी दी थी और उनकी लड़कियों के विवाह भी हिन्दू परिवारों में हो गए थे परन्तु लड़कों के लिए लड़कियां नही मिली। वैदिक धर्म में दीक्षित किये गये दूसरे सज्जन थे श्री ज्ञानेन्द्र सूफी जिन्होंने जीवनपर्यन्त वैदिक धर्म का प्रचार किया। इनके पुत्र आगाशाही काफी दिनों तक पाकिस्तान के विदेशमंत्री रहे। विद्यानन्द जी द्वारा शुद्ध करने से पूर्व भी एक बार वह शुद्ध हुए थे। हिन्दुओं द्वारा उन्हें शक की नजरों से देखने के कारण वह फिर मुसलमान बन गए थे। स्वामी विद्यानन्द को उन्होंने वचन दिया था कि इस बार शुद्ध होकर वह वैदिक धर्म में बने रहेंगे। उन्होंने अपना वचन निभाया और आजीवन वैदिक धर्म का प्रचार किया।

दिनांक 1 जून सन्, 1886 को लाहौर में डी0ए0वी0 कालेज की स्थापना की गई थी। 50 वर्ष व्यतीत होने पर सन् 1936 में उसकी स्वर्ण जयंती मनाई गयी थी। विद्यानन्द जी इस वर्ष कालेज से अंग्रेजी में एम0ए0 कर रहे थे। 1936 के समारोह की एक विशेषता उसमें लाहौर के हामैन क्रिश्चियन कालेज के तत्कालीन प्रिंसीपल ई0डी0 ल्यूकस का भाषण था जिसमें उन्होंने एक मजेदार किन्तु महत्वपूर्ण बात कही थी। अपनी टूटी–फूटी हिंन्दी में उन्होंने कहा था–''आपके कालेज ने बहुत अच्छा काम किया पर एक बात हम कहता है – ये जो बड़ा लोग जिन पर आप फखर करता है – लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, गुरुदत्त विद्यार्थी बगैरा – ये सब हमारे कालिजों में बना है। आपने ऐसा एक नहीं बनाया।'' इसी समारोह में खरी–खरी कहने के आदि स्वामी सर्वदानन्द जी ने कहा था कि गणित, इतिहास, भूगोल, फिजिक्स, कैमिस्ट्री आदि तो जैसे गर्वनमेंट कालिज या इस्लामिक कालिज मे पढ़ाए जाते हैं, वैसे ही तुम पढ़ाते हो परन्तु तुमने यदि वेद नहीं पढ़ाये तो तुम्हारे कालिज चलाने का क्या लाभ?

हैदराबाद रियासत के निरंकुश शासन से प्रजा के मान–सम्मान एवं धार्मिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा के लिए सन् 1939 में आर्यसमाज ने सत्याग्रह की घोषणा की थी। विद्यानन्द जी उन दिनों डीएवी कालिज में अध्यापन कराते थे। हैदराबाद सत्याग्रह की महत्ता को अनुभव कर विद्यानन्द जी ने नौकरी छोड़कर सत्याग्रह में भाग लिया। यह घटना आपके वैदिक धर्म के प्रति प्रेम, समर्पण और देश व समाज के लिये अपने हितों का त्याग का प्रेरणादायक उदाहरण है।

स्वामी विद्यानन्द जी होशियारपुर से 11 सत्याग्रहियों के एक जत्थे को लेकर चले। मार्ग में जालंधर, लुधियाना, अम्बाला, दिल्ली, आगरा, मुम्बई और पूना में वह जत्था रात्रि बिताने हेतु रूका। यहां विद्यानन्द जी के भाषण हुए जिससे प्रेरित होकर प्रत्येक स्थान से दो–चार व्यक्ति जत्थे में शामिल होते गए। पूना पहुंचने पर जत्थे में 65 सत्याग्रही हो गए थे। लुधियाना में प्रातःकाल प्रस्थान के समय बड़ी संख्या में महिलाएं हाथ में राखी लेकर सत्याग्रहियों को विदाई देने आईं। बहनें राखी बांधती और

साथ–साथ गीत गा रही थीं– ''चली हैदराबाद नू जितन ऋषि जी तेरी फौज रंगीली।'' दिल्ली में स्वातन्त्र्य स्मर के अमर योद्धा देवतास्वरूप भाई परमानन्द, मुम्बई में जगतगुरु शंकराचार्य तथा पूना में अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष एल.बी. भोपटकर की अध्यक्षता में विद्यानन्द जी के हैदराबाद जाने वाले सत्याग्रही जत्थे को विदाई दी गई। बम्बई में रात्रि को जनसभा हुई जिसमें विद्यानन्द जी ने लम्बा भाषण दिया जबकि पंजाब से आए लोगों को पांच मिनट का ही समय दिया जाता था। ऐसा विद्यानन्द जी की संस्कृतनिष्ठ हिन्दी, भाषण का धाराप्रवाह एवं प्रभावशाली होने के कारण किया गया।

आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान एवं अनेक शास्त्रार्थ संग्रामों के विजेता आचार्य देवेन्द्र नाथ शास्त्री सांख्यतीर्थ की पुत्री शकुन्तलादेवी काव्यतीर्थ जी से 24 मई, सन् 1939 को विद्यानन्द जी का विवाह तय हो चुका था। विवाह की सभी तैयारियां भी की जा चुकी थी। शास्त्री जी को विद्यानन्द जी के हैदराबाद–सत्याग्रह में पहुंचने की जानकारी हुई तो उन्होंने सत्याग्रह के डिक्टेटर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को पत्र लिखकर विद्यानन्द जी को सत्याग्रह से विरत करने का आग्रह किया। स्वामी जी ने विद्यानन्द जी को आचार्य देवेन्द्रनाथ शास्त्री जी का वह पत्र दिखाया। पत्र से प्रभावित हुए बिना विद्यानन्द जी ने स्वामी जी को सत्याग्रह में भाग लेने का अपना संकल्प जताया। विवाह टल गया। कुछ समय बाद आचार्य देवेंद्र नाथ शास्त्री स्वयं अजमेर से 400 सत्याग्रहियों के एक जत्थे के साथ हैदराबाद सत्याग्रह–समर में शामिल हुए। विद्यानन्द जी का विवाह सत्याग्रह की समाप्ति के पश्चात 26 दिसम्बर, 1939 को सम्पन्न हुआ। इस विवाह का दृश्य एक बड़े विद्वत–सम्मेलन का सा था। विवाह में आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान पं0 रामचन्द्र देहलवी, पं0 बुद्धदेव विद्यालंकार, पं0 हरिदत्त शास्त्री सप्ततीर्थ, प्रो0 व्यासदेव जी, पं0 बिहारी लाल शास्त्री एवं ठाकुर अमर सिंह जी आदि सम्मिलित थे।

सत्याग्रहियों के डिक्टेटर स्वामी स्वतंत्रानन्द जी के निर्देश पर विद्यानन्द जी ने स्वामी आत्मानन्द के साथ सत्याग्रह समिति द्वारा प्रकाशित ''दैनिक दिग्विजय'' के सम्पादक पं0 हरिशंकर शर्मा के सहयोगी के रूप में कार्य किया। शोलापुर में लाहौर से आए डॉ0 गिरधारीलाल के जत्थे में 10–12 वर्ष का एक बालक, जिसे कम उम्र के कारण सत्याग्रह में भाग लेने से मना किया गया था, वह यह कह कर शामिल हो गया कि क्या बाल हकीकत राय डॉ0 गिरधारी लाल जी की तरह सफेद दाढ़ी वाला था? ऐसा ही एक बालक चिनयोट (पंजाब) के जत्थे में शामिल था जिसने सत्याग्रहियों को पहनाई जाने वाली फूल मालाओं को यह कह कर पहनने से मना कर दिया कि अभी तो यह परीक्षा देने जा रहा है। जब पास होकर लौटे तब उसे माला पहनाई जाए। स्वामी विद्यानन्द जी बताते हैं कि जब उन्हें उन बच्चों की याद आती है तो वह भावुक हो जाते है, उनकी आंखें गीली हो जाती हैं।

विद्यानन्द जी ने स्वामी आत्मानन्द के साथ उस्मानाबाद जिले की एक तहसील ''कलम'' में सत्याग्रह किया और गिरफ्तारी दी। गुप्त मार्गों से गंतव्य पर पहुंच कर दोनों सत्याग्रहियों ने जेब से ओ३म् ध्वज निकाल कर अपने हाथों की लाठियों में लगा लिए और भीड़ में पहुंच कर ''जो बोले सो अभय वैदिक धर्म की जय'' बोलकर सत्याग्रह किया। स्वामी विद्यानन्द जी व स्वामी आत्मानन्द जी को छः छः महीने की सजा हुई। दो दिन कलम में रहे और अपना भोजन स्वयं तैयार

किया। स्वामी आत्मानन्द जी ने पराठे सेके और विद्यानन्द जी ने सब्जी बनाई। इसके बाद दोनों को उस्मानाबाद की जेल में रखा गया जहां उनकी पं. जगदेवसिंह सिद्धान्ती तथा आचार्य भगवानदेव जी से भेंट हुई।

स्वामी विद्यानन्द जी को 15 दिन के बाद गुलबर्गा जेल भेज दिया गया। जेल में वह और ठाकुर अमर सिंह जी अन्य सत्याग्रहियों को प्रवचन करते थे और प्रसिद्ध आर्य नेता पं0 प्रकाशवीर शास्त्री भजन बुलवाया करते थे। 17 अगस्त, 1939 को सत्याग्रह समाप्त हुआ। जेल से रिहा होकर स्वामी विद्यानन्द जी दिल्ली आये। कुछ समय बाद सिन्ध की सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश के 14 वें समुल्लास के पढ़ने, रखने व छापने आदि पर प्रतिबंध लगा दिया तो आर्यसमाज ने वहां भी सत्याग्रह किया। स्वामी विद्यानन्द जी सत्याग्रह के डिक्टेटर बनाए गए। जिस बैंक में विद्यानन्द जी नौकरी करते थे उसके मैनेजिंग डायरेक्टर श्री राजेन्द्र जैन थे। सत्याग्रह में शामिल होने के लिए वे अपना त्याग पत्र लेकर उनके पास गए परन्तु श्री जैन ने उनका त्यागपत्र फाड़ दिया और कहा कि आप सत्याग्रह का काम देखिये। जब तक आप नहीं आते आपका वेतन प्रत्येक माह की पहली तारीख को आपके घर भेजा जाता रहेगा। श्री राजेन्द्र जैन जी ने ऐसा किया भी। श्री जैन का यह व्यवहार प्रशंसनीय है। ऐसा व्यवहार आर्यसमाज की संस्थायें भी अपने लोगों के प्रति नहीं करती।

स्वामी विद्यानन्द जी के प्रयत्नों से सन् 1944 में दिल्ली की 34 आर्यसमाजों को एक सूत्र में पिरोने के उद्देश्य से आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली की स्थापना हुई। इस सभा की स्थापनार्थ पहली बैठक आर्यसमाज नया–बांस, दिल्ली में हुई। बैठक में आर्यसमाज के प्रमुख नेता लाला नारायण दत्त ठेकेदार, लाला देशबंधु गुप्त, पं0 इन्द्र विद्यावाचस्पति, डॉ0 युद्धवीर सिंह जी आदि उपस्थित थे। इस बैठक में स्वामी विद्यानन्द जी ने आर्य केन्द्रीय सभा की स्थापना के अपने प्रस्ताव के अनुसार उत्पन्न आशंकाओं का निराकरण कर अपना आशय स्पष्ट किया। अगली बैठक आर्यसमाज, सदर बाजार, दिल्ली में आर्यसमाज के सर्वप्रिय नेता महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली की स्थापना का निश्चय हुआ। पं0 रामचन्द्र देहलवी एवं देशराज चौधरी जी आदि बैठक में उपस्थित थे। लाला नारायणदत्त जी सर्वसम्मति से आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के पहले प्रधान बने जो मृत्यु पर्यन्त रहे। इसी अवसर पर सर्वसम्मति से विद्यानन्द जी को मंत्री निर्वाचित किया गया। 12 वर्ष तक स्वामी विद्यानन्द जी निर्विरोध मंत्री चुने जाते रहे। लाला नारायण दत्त जी की मृत्यु के बाद क्रमशः लाला देशबंधु गुप्त, पं0 इन्द्र विद्यावाचस्पति, डॉ0 युद्धवीर सिंह, डॉ0 गोवर्धनलाल दत्त, चौधरी देशराज और प्रो0 रामसिंह सर्वसम्मति से प्रधान बने।

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी ने डेढ़ दर्जन से अधिक उच्च कोटि के ग्रन्थ लिखे हैं। तत्वमसि, वेदमीमांसा, अध्यात्म मीमांसा, सृष्टिक्रम एवं विकासवाद, बागी दयानन्द, आर्यों का आदि देश और उनकी सभ्यता, गौ की पुकार आदि उनके कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। स्वामी दयानन्द के प्रमुख ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि आदि पर उन्होंने भाष्कर नाम से टीकायें लिखी हैं। स्वामी जी ऐसे लेखक थे जिनका लिखा एक–एक शब्द पठनीय एवं महनीय है। हमारा सौभाग्य रहा कि हमें स्वामी जी का सान्निध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त रहा। हमने उनसे निवेदन कर संस्कार भाष्कर टीका लिखने का अनुरोध किया था। यह सुझाव

हमने डॉ0 रामनाथ वेदालंकार जी से मंत्रणा करने के पश्चात उन्हें दिया था। संस्कारविधि पर संस्कार भाष्कर टीका का यह प्रस्ताव हमने स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी को रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत) के वार्षिकोत्सव के अवसर पर सन् 1995 में किया था। स्वामी जी ने इस कार्य को किया और उनका यह ग्रन्थ सुलभ है।

यह भी बता दें कि 28 फरवरी, सन् 1997 को स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी का सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से अभिनन्दन कर उन्हें 31 लाख रुपये की थैली भेंट की गई थी। स्वामी जी ने यह पूरी धनराशि न्यास को उनके कार्यों के लिये प्रदान कर दी थी। यह अभिनन्दन कार्यक्रम ऋषिभक्त आर्यनेता आचार्य भद्रसेन जी के सुपुत्र कैप्टेन देवरत्न आर्य जी की प्रेरणा एवं सहयोग से हुआ था। कैप्टेन देवरत्न जी ने हमें स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी को इस अवसर पर भेंट किया जाने वाला अभिनन्दन पत्र तैयार करने को कहा था। हमने यह कार्य आचार्य डॉ0 रामनाथ वेदालंकार जी के द्वारा किया था। इस अभिनन्दन पत्र की उदयपुर के महोत्सव में बहुत प्रशंसा की गई थी। इसका समस्त श्रेय आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी को था। यह बात हमने स्वामी विद्यानन्द जी को उदयपुर में कुछ समय पहले बता दी थी। स्वामी विद्यानन्द जी आर्यसमाज के उच्च कोटि के अग्रणीय विद्वानों की परम्परा वाले आदर्श जीवन के धनी थे। उन्होंने अपने 83 वर्ष के जीवन में आर्यसमाज की उल्लेखनीय सेवा की। अपने कालजयी साहित्य के माध्यम से वह आज भी अमर हैं। हम स्वयं को धन्य समझते हैं कि हमारा स्वामी जी व उनके समकालीन अनेक उच्चकोटि के आर्य विद्वानों से सम्पर्क व पत्राचार रहा है। हम पाठकों से निवेदन करेंगे कि वह स्वामी विद्यानन्द जी के आर्य साहित्य को अपने अध्ययन का अंग बनायें। इससे उनकी तर्कणा शक्ति में वृद्धि सहित ज्ञानवर्धन होगा और वह अन्यान्य प्रकार से लाभान्वित होंगे। स्वामी विद्यानन्द जी पावन स्मृति को सादर नमन।

राष्ट्रीय

पहेली–आत्मा क्यों इन्द्रियों के लिए अपने आपको न्योछावर करता है? और गिला(शिकायत) अपना क्यों करता है?

उत्तरः–वस्तुतः प्रभु का गहरा रहस्य उसमें है। यह ब्रह्मण्ड, राष्ट्र प्रभु है–इन्द्रियां उसकी प्रजा हैं। जैसे प्रभु का सर्वस्त राष्ट्र के लिए है, ऐसे ही राजकुमार–जीवात्मा का सर्वस्व राष्ट्र के लिए न्यौछावर है। यह है एक चिह्न। ऐसे ही जीवात्मा अपने आपको प्रभु का स्थानापन्न पुत्र जान लेता है। वह भी अपना सर्वस्व अपने पिता के समस्त राष्ट्र के लिए न्यौछावर करता है अर्थात् निष्काम कर्म करता है जैसे सारे महापुरुष करते आए हैं।

आँख मूंद जाप जप

भजन के समय आँख बन्द करने से तो मन चलायमान हो जाता है पर भोजन के समय आंख बन्द करके चबाने से दिल चबाने में टिक जाता है या ओ३म् का जाप साथ–साथ में लगा रहता है, बाहर नहीं जाने पाता।

–महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

हमारे हनुमान वेदों के विद्वान्

(वाट्सऐप पर प्राप्त हनुमान् चित्र पर अभिव्यक्त प्रतिक्रिया)

चित्र हनुमान् का पुच्छविहीन दिखावा।
है विज्ञान–दृष्टि से सही यह पावा।।
कोरी आस्था नहीं है प्रशंसित जग माहीं।
सुगति–कसौटी पर खरी जो उतरे नाहीं।।
बन्दर नहीं कभी वेद पढ़ सकता।
श्रीराम वचन से पता है यह चलता।।
राम कहें ''वेदों का विद्वान्'' उनको है पावा।
व्याकरण के पूरे ज्ञाता राम करें यह दावा।।
यदि कन्धे पर उनके गदा दिखाते।
वीर रस में वह अनुपम शोभा पाते।।
'वेद' विचार है यही, वानर नहीं थे हनुमान्।
धारक थे मानव देह के, जो जाने सो मतिमान्।।

श्री राम भक्त हनुमान् की जय।
वेदों के विद्वान् हनुमान् की जय।
ब्रह्मचारी व्रतधारी हनुमान् की जय।
वैदिक संस्कृति के वाहक हनुमान् की जय।
महाबली शक्तिमान् हनुमान की जय।
राम आज्ञा के पालक हनुमान् की जय।
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की जय।
जो बोले सो अभय, वैदिक धर्म की जय।

प्रस्तुति :
पंडित वेदप्रकाश शास्त्री
शास्त्री भवन, 4-E, कैलाश नगर,
फाजिलका–152123 (पंजाब)
मोब. : 9463428299

धर्म

–वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

धर्म वह है–जिससे किसी की सत्ता और मान स्थिर है।

अधिभौतिक–सत्ता धन से है, मान दान से है।

अधिदैविक–सत्ता संगठन से है, मान परोपकार से है।

आध्यात्मिक–सत्ता ईश्वरभक्ति से है, मान सदाचार से है।

शारीरिक– सत्ता स्वास्थ्य से है, मान भले व्यवहार से है।

मनसिक सत्ता–सदाचार से है, मान परोपकार से है।

शब्द ध्वनि मिलाप जड़ पदार्थ से जीवन कैसे? जड़ पदार्थ देव कैसे?

पदार्थ–जिसमें आकाश नहीं, वह एकाकी है, जिसमें आकाश है वह संयुक्त है। जैसे आकाश मिलाप का साधन है–ऐसे शब्द (जो आकाश का विषय है) एक चेतन को दूसरे चेतन से मिलाने का साधन है, पहचान का साधन है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का परिचित, जानकर या प्रेमी तब ही बन सकता है–जब वे बोलेंगे। परमात्मा प्रेम और उसकी पहचान के लिये भी शब्द ध्वनि (ओ३म्) की आवश्यकता है। जब मैं हर गति के अन्दर, जिस किसी भी शब्द या ध्वनि को सुनता हूँ–यदि उसमें मुझे उस ध्वनि ओ३म् का उच्चारण अनुभव होता है–तो मुझे हर कण–कण में (जो गतिशील है) ओ३म् का भान होने लगेगा, और मुझमें उस गति– उद्गीथ का नशा और मस्ती चढ़ जाएगी। साधक प्रथम अपने विचार से, बनावटी ख्याल से, हर वस्तु से, जो गति या अग्नि से ध्वनि उत्पन्न होती है, तत्काल ओ३म् के उच्चारण का अपने आप मिलान करता है। फिर कुछ काल पश्चात् सब ध्वनियां–सब ओ३म् का नाद सुनाती दिखती हैं–और वह सदा मस्त बना रहता है। यहां तक कि हवा की सांय–सांय, कव्वे की कांय–कांय, जल की रां–रां, बछड़े की बां–बां, बच्चे की उवां–उवां, और मच्छर की जां–जां, रेल की कूक, और मोटर की हूक, बादल की गड़–गड़ और बिजली की कड़– कड़ में वह ओ३म् ही सुनता है। साधारण मनुष्य के समान प्राकृतिक अशुद्ध ध्वनि नहीं सुनता।

आहा! प्रभु प्रियतम आहा! मैं तो भूला ही रहा। यूंही आयु चली गई। आज तेरी सुन्दर पवन का अनुभव हो रहा है। यह तो बड़े स्वर से, ऊंचे स्वर से नाद और सुन्दर प्यारा ओ३म् नाम का नाद करती स्पर्श करती है। बड़ी दूर से ध्वनि करती–तेरे प्यारे ओ३म् नाम को साथ मिलाती आती है और मुख पर लग–लगकर आनन्दित कर रही है। आज मैं समझा–यह जड़ पवन मुझे जीवन कैसे दे सकती है? इसमें तू ही बसता है। इसलिए यह पवन तेरा गान गाती–गाती तुझे, तेरे प्यारे नाम के नाद को साथ लाती हुई जहां पर स्पर्श करती है–उसे पवित्र कर देती है, जीवन दे देती है। तेरे नाम ओ३म् नाम पर यह मस्त झूमती–झामती, कभी वेग के साथ तेरे नाम

पर नाचती–नाचती और मिट्टी, धूलि, रेत, वृक्षों के पत्ते–पत्तियों को नचाती, ऊपर और नीचे तान पर तान उड़ाती, सब पदार्थों और प्राणियों का जीवनधार कहलाती है। तेरे नाम का शोर मचाती और सब जीवधारियों और निर्जीवों से मचवाती है। इसीलिए पवन सबको प्यारी, और सबसे अधिक प्यारी लगती है। आज मैं इसकी ध्वनि का, इसके नाद का खूब भान कर रहा हूं। प्रभो! ऐसी कृपा करे–कि अब यह नाद मेरे श्वास–श्वास की पवन में चौबीस घंटे पर्यन्त सुनाई देता रहे और यह नाद, यह पवन तेरे नाम का मेरे मस्तिष्क में खुमार और नशा चढ़ावे, कहीं यह तेरी दात, तेरी आज की दात, क्षणिक न हो। मैं सदा के लिए–तेरे पवित्र चरणों में प्रार्थना और याचना करता हूं।

तेरा पंखा–कुली मेरे जीवन का आधार है। शासक का पंखा–कुली तो अवश्य होता है–पर तेरा, तुझ शासक का पंखा–कुली तो शासक के लिए भी देवता है। पंखा–कुली आजीविका मांगता है–और तेरा पंखा–कुली आजीविका देता है, इसलिए देव है।

ग्रहण और त्याग ही जीवन है

सृष्टि नियम के अनुसार जीवन अथवा किसी वस्तु की सत्ता की स्थिरता, ग्रहण और त्याग (लेने और देने) से रहती है। नासिका श्वास लेती और फिर निकालती है–तो जीवन रहता है। मुख अन्न–जल लेता है और गुदा–उपस्थेन्द्रियों से निकालता है–तो स्वास्थ्य स्थिर रहता है। कान से सुनता और जिह्वा से बोलता है–तो स्मृति रहती है। इस प्रकार जैसे शरीर की इन्द्रियों के लेन–देन के उचित व्यवहार से शरीर की सत्ता रहती है, जब ग्रहण करे और निकाले। नहीं तो मुर्दा हो जाता है। या निकाले (देवे) और फिर ग्रहण न करे–तो भी जीवन नहीं, स्वस्थता नहीं। ऐसे ही प्रभु–प्रियतम का नाम जब सुने और बोले नहीं, या लेवे और उसका जनता को दान न देवे, अन्दर धरे और फिर जपे नहीं–तो जीवन नहीं बनता या बाहर दान देता रहे–प्रभु का नाम निकालता रहे और अन्तर्मुख होकर ग्रहण न करे–तो भी निर्बल और निर्जीवन हो जाता है।

मन और बुराई के मध्य में विचार की रस्सी होती है। बुराई उस रस्सी से सदा बंधी रहती है। जब तक मन के अन्दर विचार बंधा हुआ है–तब तक मन आगे और बुराई पीछे–पीछे साथ रहती है। जब मन उस रस्सी (विचार) को छोड़ देता है तो बुराई दौड़ जाती है–जैसे पशु दौड़ जाते है।

विनम्र अनुरोध

वैदिक साधक आश्रम तपोवन, देहरादून द्वारा यज्ञशाला का विस्तारीकरण, तपोवन विद्या निकेतन में कमरों का निर्माण तथा लगभग एक हजार फुट लम्बी बाऊंड्रीवाल (जो सड़क के चौड़ीकरण के कारण प्रशासन द्वारा ध्वस्त कर दी गई थी।) का निर्माण कराया जा रहा है। निर्माण कार्य में अत्यधिक धन व्यय होने के कारण तपोवन आश्रम इस समय धनाभाव से जूझ रहा है और कई सप्लायर्स की देनदारी है। आश्रम के शुभचिंतक सभी भाई–बहनों से अनुरोध है कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार अधिक से अधिक दान देकर तपोवन आश्रम की सहायता करें। आश्रम को दिया गया दान आयकर की धारा 80–जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

श्री मनमोहन आर्य का डी.ए.वी. कॉलेज कमेटी द्वारा पुणे में सम्मान

पवमान मासिक पत्रिका के सम्पादक, आर्य लेखक एवं वैदिक विचारधारा के प्रचारक श्री मन मोहन आर्य का आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली एवं डी0ए0वी0 पब्लिक स्कूल एवं कालेज कमेटी, दिल्ली की ओर से पुणे के डी0ए0वी0 पब्लिक स्कूल, औंध में 20 अप्रैल, सन् 2019 को महात्मा हंसराज जी की 155 वीं जयन्ती पर आयोजित भव्य समर्पण समारोह में सम्मान पत्र, शाल, तुलसी का पौधा और नगद धनराशि देकर सम्मान किया गया। यह ध्यातव्य है कि डी0ए0वी0 स्कूल व कालेज की लगभग एक हजार संस्थायें देश भर में संचालित हैं जहां लगभग 34 लाख बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इन्हें वेद वर्णित ईश्वर के स्वरूप, सन्ध्या, उपासना, यज्ञ, महर्षि दयानन्द एवं महापुरुषों से समय समय पर परिचित कराया जाता है। विद्यालयों में धर्म शिक्षक नियुक्त हैं जो बच्चों को नैतिक शिक्षा का अध्ययन कराते हैं। आर्यसमाज के प्रमुख स्तम्भ ऋषि भक्त महात्मा आनन्द स्वामी के पौत्र पद्मश्री डॉ0 पूनम सूरी जी प्रादेशिक सभा एवं कालेज कमेटी के यशस्वी प्रधान हैं। इस अवसर पर आर्यजगत की 17 अन्य विभूतियों का भी इसी प्रकार सम्मान किया गया। श्री मनमोहन आर्य व अन्य सभी विद्वानों के सम्मान से वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून एवं पवमान परिवार प्रसन्नता एवं गौरव का अनुभव करते हैं एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली व इसके यशस्वी प्रधान जी का धन्यवाद करते हैं।

श्री मनमोहन आर्य विगत 45 वर्षों से आर्यसमाज से सक्रियता से जुड़े हुए हैं। आपने यज्ञ एवं सत्संगों का आयोजन कर और साथ ही लेखों के माध्यम से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार किया है। विगत 5 वर्षों से वह प्रतिदिन एक लेख लिखते हैं। उनके द्वारा लिखित लेखों की संख्या दो हजार से अधिक है। न केवल आर्य पत्र–पत्रिकाओं द्वारा अपितु फेसबुक, इमेल, व्यक्तिगत रुप से वाट्सऐप पर 300 मित्रों, 60 वाट्सऐप ग्रुपों सहित अनेक नैट साइटों एवं व्यवसायिक दैनिक व साप्ताहिक पत्र पत्रिकाओं के द्वारा दैनिक रूप से प्रचार होता है।

श्री मनमोहन आर्य के पुणे में सम्मान से तपोवन आश्रम एवं पवमान परिवार हर्षित है और उन्हें व सभी सम्मानित विद्वानों को अपनी शुभकामनायें एवं बधाई देते हैं।

डॉ० कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री
मुख्य सम्पादक 'पवमान'
9336225967

ई० प्रेम प्रकाश शर्मा
मंत्री
9412051586

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
प्रधान
9810033799

एवं समस्त वैदिक साधन आश्रम तपोवन परिवार

कब खायें, कितना खायें, क्या खायें, कैसे खायें

—के.एल. रंगवानी

हम क्या खायें समग्र दृष्टिकोण आधारभूत सिद्धांत के अनुसार, प्रकृति की ओर से प्राप्त ताजे फल सब्जियां, पूर्णान्न एक निश्चित अनुपात में अलग–2 खाद्य पदार्थ लें तो हमें विशेष पोषक खाद्य पदार्थ खनिज, लवण एवं विटामिन समस्त ज्ञात एवं अज्ञात खाद्य तत्व अवश्य मिल जावेगे किसी लवण अथवा विटामिन की गोलियां लेने की आवश्यकता नहीं होगी। जब प्रकृति द्वारा प्रदत्त भोजन पर हम आधारित हो जाते हैं तो सभी पोषक तत्व सही अनुपात में मिल जाते हैं।

भोजन का मूल्य भी बड़ी समस्या है। यदि हमें सही ज्ञान है तो मूल्य को निरपेक्ष करने के लिए अपने खाद्य का चुनाव सोच समझकर करना चाहिये। स्वास्थ्यवर्धक भोजन अधिक मूल्यवान भी न होना चाहिये कि एक गरीब व्यक्ति खरीद न सके।

सुरक्षात्मक भोजन

पत्तेदार सब्जियां, मीठे रसदार फल, हरे नारियल का पानी, गन्ने का रस, मीठे गूदे वाले फल, बिना निशास्ते वाली सब्जियां(Non starch vegitables) धारोषण या एक उफान वाला गाय का दूध, बिना चर्बी वाले शक्ति देने वाले खाद्य पदार्थ–सूखे मेवे–आलू एवं अर्बी, शक्करकंद, मकई, बाजरा, रागी, गेहूँ, बिना पालिश चावल, गुड़, शहद, उच्च प्रोटीन बिना चर्बी वाला खाद्य–प्रोटीन की पूर्ति कुछ दाने डालकर अनार से की जा सकती है। जिसमें प्रोटीन भोजन का 10–15 प्रतिशत लेना आवश्यक है। मूंग, मसूर, चना, अरहर की दालें उपयोग में लायी जा सकती हैं।

चर्बी एवं प्रोटीन प्रधान खाद्य पदार्थ– इसमें सूखे मेवे बादाम, अखरोट, काजू एवं तिलहन अर्थात तिल, सरसों, नारियल, मूंगफली एवं सोयाबीन का तेल।

चर्बी एवं तेल– वनस्पति चर्बी तेल का उपयोग अधिकतम 20 ग्राम प्रतिदिन असंशलेषित तेल का उपयोग किया जा सकता है।

निम्न खाद्यों से बचे– चीनी, मेवा, घी वनस्पति, चाकलेट केक, पेसट्रीज़। अखाद्य न ले– चाय, काफी, कोको, बोतलबंद पेय एवं शराब तम्बाकू इत्यादि।

When shall we Eat कब खायें

निम्न परिस्थितियों में भोजन किया जावे :

1. जब आमाशय खाली हो और सिकुड़ने लगे।
2. आमाशय के सिकुड़ते समय उसमें बन्द वायु जिसमें कोई गंध नहीं होती और न स्वाद होता है, उसे साफ वायु कहते हैं, उक्त वायु आमाशय से निकलकर मुंह से बाहर आती है, उस समय एक ग्लास जल का लिया जावे।
3. शरीर में हल्कापन अनुभव हो।
4. सम्पूर्ण शरीर में हल्कापन अनुभव होने से पूर्व या बाद में संतोषजनक मल त्याग के पश्चात शरीर में हल्कापन आने पर एवं शक्ति एवं स्फूर्ति अनुभव होने पर।
5. कार्य करने में मन लगता हो और ताज़गी महसूस होने पर।

6. कोई शारीरिक श्रम या गहरा व्यायाम 20–30 मिनट के लिये करने के बाद।

7. जल का अधिक उपयोग किंतु जल एक ही समय अधिक जल अथवा गटागट पीने की आदत छोड़नी चाहिये। जल थोड़े–थोड़े अंतराल के बाद थोड़ा–थोड़ा जल घूंट–घूंटकर पीना चाहिये। एक लीटर जल इस तरह मौसम एवं प्यास के आधार पर पीया जा सकता है। खाली पेट पानी पीने से आमाशय पर प्रभाव पड़ता है। यदि मल त्याग नहीं हुआ है तो यह मल त्याग को अग्रसर करेगा।

8. कार्य करने के बाद, विश्राम लें एवं स्फूर्तिदायक स्नान लेने के पश्चात साफ कपड़े पहनकर बैठकर सादा भोजन करें, पोषणयुक्त भोजन ताजी हवा में तथा परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर करें।

9. हमें अपना भोजन कार्यालय अथवा दुकान के समय को देखकर निश्चित करना चाहिये।

10. यदि मल त्याग, किसी खाद्य वस्तु के आमाशय में जाने के बाद आता है तो यह त्रुटिपूर्वक आदत को बदले।

11. कुल 2 से 3 लीटर पाचक रस जो आमाशय एवं मुंह में उत्पन्न होती है, की आवश्यकता भोजन को पचाने में होती है। अतः पानी की अधिक आवश्यकता पड़ती है। चूंकि पानी भोजन करते समय एवं भोजन उपरांत नहीं पीना चाहिये। इसलिये आवश्यक पानी भोजन से कम से कम 30–40 मिनट पूर्व ले लेना चाहिये। यथेष्ट मात्रा में जल का उपयोग करना चाहिये। यदि आदत नहीं है तो यह आदत धीरे–धीरे विकसित करना चाहिये।

भोजन कितना करना चाहिये

1. गीता के अनुसार अपने भोजन को नियमित कर जीवनी शक्ति को बढ़ायें।

2. आवश्यकता से अधिक भोजन अपने स्वास्थ्य को नष्ट करने के समान है।

3. अनावश्यक भोजन आयु को कम कर स्वर्ग के दरवाजे बंद करता है।

4. अनावश्यक भोजन समस्त लोगों को अप्रिय है। यह आदत छोड़ना चाहिये।

5. इन्दिरा गाँधी ने कहा था कि आवश्यकता से अधिक खाना हमारे भारत वर्ष के लोगों की बड़ी समस्या है उन्हें पता नहीं है कि सच्ची भूख क्या है।

6. वैज्ञानिकों का कहना है कि 0.53 ग्राम प्रोटीन प्रत्येक मनुष्य के प्रति किलो वजन प्रतिदिन है एवं व्यस्क पुरुष/स्त्री के लिये है।

7. प्रोटीन, चर्बी एवं स्टार्च आवश्यकता से अधिक खाना हानिकारक है किंतु खनिज लवण और विटामिन यदि प्राकृतिक स्त्रोतों से लिये गये हैं एवं अधिक खाये जाते हैं तो वे हानि नहीं पहुँचाते हैं।

8. मार्गदर्शक सिद्धांत– भोजन का महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि भोजन में मध्य मार्ग अपनाना चाहिये। पाचन शक्ति के अनुसार भोजन की मात्रा निश्चित करना चाहिये। भोजन पचाने की जितनी सीमा हो भोजन कुछ कम ही करना चाहिये। पाचन संस्थान के किसी भी प्रकार का बोझ अनुभव नहीं होना चाहिये। पाचन संस्थान के किसी भी अंक पर भार महसूस न हो।

9. अधिक भोजन करने से वह पाचन संस्थान में अधिक समय तक रहता है। फलस्वरूप

स्टार्च सड़ने लगता है एवं प्रोटीन गलने लगते हैं। विषमय पदार्थ बनते हैं एवं बदबूदार गैसें बनती हैं। यहाँ तक कि गटर जैसी बदबू आती है। रोगों का मुख्य कारण है पाचन संस्थान में विजातीय द्रव्यों का बनना एवं उनका रक्त में मिलना।

10. नाश्ता नहीं योजना No Break fast plan एक अच्छा नियम है क्योंकि सुबह नींद से उठकर हमें स्फूर्ति मिलती है किंतु भूख नहीं। प्रातः उठने के पहले तक कुछ भी न ले तो अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त होगा। वृद्धों को दिन में दो बार, युवाओं को दिन में तीन बार एवं बच्चों को दिन में चार बार भोजन दिया जा सकता है। बेड टी एवं बेट काफी से बचना प्लेग रोग से बचने जैसा है।

भोजन कैसे खायें

भोजन के संबंध में 24 उपयोगी सूत्रः

1. आमाशय के तीन भाग करें 1/3 ठोस, 1/3 तरल, 1/3 खाली
2. नियत समय पर नियत मात्रा में भोजन करें।
3. ईश्वर ध्यान के बाद भोजन करना, भोजन के समय प्रसन्न रहना
4. भोजन की मात्रा अपनी शक्ति के अनुकूल ही लेनी चाहिए
5. घृणा और अरुचिकर भोजन नहीं करना चाहिये।
6. बांसी भोजन से आलस्य एवं स्मरण शक्ति में कमजोरी होती है।
7. शरीर ताप से थोड़ा अधिक गरम भोजन लाभकारी है। जल्दी पचता है, वायु निकालता है, जठराग्नि प्रज्वलित करता है। कफ निकालता है।
8. जली हुई रोटी सारहीन होती है। कच्ची रोटी दर्द अजीर्ण पैदा करती है।
9. भिन्न मौसम या समय पर भोजन में परिवर्तन भी आवश्यक है।
10. अधिक गरम या अधिक ठंडा भोजन दांतों के लिए हानिकारक है।
11. भोजन में कुछ चिकनाहट भी आवश्यक है।
12. भोजन में अंतर छः घंटे का तीन से कम नहीं।
13. 30 मिनट से कम समय में भोजन नहीं करना चाहिये।
14. क्षार और विटामिन युक्त भोजन लें। तरकारी और फल की मात्रा गेहूँ, चावल, आलू, दाल से तीन गुना होना चाहिये।
15. घी–तेल से तली चीजें कम ही खाना चाहिये। कटहल, घइया, उड़द की दाल जैसी भारी चीजें कम ही खाना चाहिये।
16. भोजन करते समय हंसना और बोलना ठीक नहीं रहता, इससे श्वास नली में रुकावट हो सकती हैं
17. प्रातः चाय काफी के स्थान पर नींबू पानी लेना चाहिये।
19. दोपहर भोजन के पश्चात 10–20 मिनट लेटकर विश्राम करना चाहिये पर सोना नहीं चाहिये। अन्यथा हानि होगी। सांयकाल भोजन के पश्चात कम से कम 1.5 कि.मी. टहलना चाहिये।
20. शाम का भोजन सोने से तीन घंटे कम से कम दो घंटे पहले कर लेना चाहिये। खाते ही सो जाने से पचने में गड़बड़ी होती है और नींद भी सुखमय नहीं होती।

21. भोजन में एक साथ बहुत सी चीजें होना हानिकारक है। इससे अधिक भोजन की संभावना रहती है।

22. रसेदार शाक या दाल भोजन में ठीक रहता है। सूखे भोजन से कलेजे में जलन और रक्ता मिश्रण में बाधा पहुंचती है।

23. अधिक चिकनाई भी हानिकारक है। केवल विशेष श्रमशील व्यायाम वालों के लिए ही ठीक है।

24. खाने को आधा, पानी को दुगना, कसरत को तिगुना, हंसने को चौगुना और प्रार्थना को पांच गुना करे।

भोजन से पूर्व निम्न प्रक्रियाएं अपनायें

पालथी लगाकर बैठे, कोई भी प्रार्थना तीन बार करें, जलपात्र साथ में रखे, गला एवं भोजन नली के अत्यधिक सूखे होने की दशा में तीन आचमन मध्य में ले सकते हैं।

भोजन काल में ध्यान रखे

1. भोजन के संतुलित ग्रास को चबाचबा कर खायें।
2. शांतमन से बिना किसी से बात किये भोजन करें।
3. प्रथम डकार आने तक भोजन समाप्त करने की आदत डालें।
4. भोजनकाल तथा उसके उपरांत एक घंटे तक पानी न पियें।

महत्वपूर्ण– भोजन से पूर्व अधिक प्यास लगने पर जल आधा घंटे पूर्व पी सकते हैं। रुखे पदार्थ होने पर भोजन मध्य में 2–3 घूंट पानी पी सकते हैं।

आदत डालें–

1. दोनों भोजनों के बीच शीतकाल में 6–7 गिलास तथा अन्य मौसम में 8–10 गिलास स्वच्छ जल पीयें।
2. अत्यधिक मिर्च मसालों से युक्त गरिष्ट तथा मांसाहारी भोजन न करें।
3. चोकरयुक्त आटा अनपालिशड चावल भोजन में प्रयोग करें।
4. ऋतु अनुरूप हरीसाग सब्जियों एवं फलों का सेवन करें।
5. कई प्रकार के भोजन एक साथ न करें।
6. दो भोजन के मध्य कम से कम 5–7 घंटे बाद रखने की, भोजन के एक घंटे बाद पानी तथा 1 या दो घंटे बाद भूख लगने पर छाछ, नींबू, शहद, पानी, फल रस लेने की आदत डालें।
7. सप्ताह में एक बार उपवास रखने तथा उपवास काल में मौसम के अनुसार फल/फल रस एवं अधिक पानी का प्रयोग करने तथा सादा भोजन करें।
8. ऋतु अनुरुप आंवला, अदरक, काली मिर्च, करेला, नीम, मेथीदाने को भोजन में सम्मिलित करें।
9. ब्रह्मचर्य में विश्वास रखने एवं पालन करने की आदत डालें।
10. रात्रि विश्राम में सिर दक्षिण एवं पैर उत्तर दिशा में या सिर को पूर्व पैर पश्चिम दिशा में करके सोने की आदत डालें।
11. रात्रि शयन से पूर्व अपने दांत टूथपेस्ट से नहीं अंगली से मंजन करें। दांतों में फंसी टुकड़ों को खाली एवं गीले ब्रश से निकालें।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

युवाओं हेतु दिव्य जीवन निर्माण शिविर (आवासीय)

युवति वर्ग– 5 जून सांयकाल से 9 जून 2019 प्रातः काल तक

युवक वर्ग– 12 जून सांयकाल से 16 जून 2019 प्रातः काल तक

आयु सीमा– 15 वर्ष से 32 वर्ष तक

स्थान – वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी देहरादून

शिविर निर्देशक– आचार्य आशीष जी तपोवन आश्रम तथा सहयोगी शिक्षक वर्ग

विषय–

1. Study Skills
2. पूर्ण व्यक्तित्व विकास, (Total personality development)
3. स्मरण शक्ति तीव्र करने के उपाय, मनोनियंन्त्रण,
4. सुखी जीवन के टिप्स, ध्यान (मेडीटेशन), आत्म सुरक्षा के उपाय (मार्शल आर्ट्स) एवं
5. वैदिक सार्वजनीन सत्यसिद्वान्तों का परिचय, प्रश्नोत्तर एवं वीडियों शो आदि।

भाषा – हिन्दी एवं अंग्रेजी

नियम–

1. शिविर मे पूर्ण काल अनुशासित न रहने पर पूरे ग्रुप को अभिभावक के साथ वापिस भेजा जा सकता है। इसकी जिम्मेदारी उन्हीं की मानी जायेगी।
2. प्रतिभागी को माता पिता अथवा प्रेरक की लिखित स्वीकृति भी जमा करनी होगी।
3. विद्यार्थी की अपनी गलती से हुई व्यक्तिगत हानि की जिम्मेदारी आयोजक की नहीं होगी।

शिविर शुल्क– इस ईश्वरीय कार्य में प्रत्येक प्रतिभागी एवं अभिभावक द्वारा भावना पूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना अनिवार्य है।

आरक्षण : अपना स्थान निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सुरक्षित करा लेवें।

1. श्री नन्दकिशोर जी, मो0– 9310444170 (प्रातः 10 से सायं 4, रात्रि 8 से 10 बजे तक)
2. श्री प्रेम जी , मो0 08076873112 (प्रातः 10 से सायं 4.30 रात्रि 8 से 9.30 बजे तक
3. आचार्य आशीष जी, देहरादून मो0 09410506701 (रात्रि 8 बजे से 9.15 बजे तक)

दर्शन कुमार अग्निहोत्री (प्रधान)
मोब : 9810033799

ई० प्रेम प्रकाश शर्मा (मंत्री)
9412051586

Delite KOM

freedom to work...

DELITE KOM LIMITED

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

Delite KOM **DELITE KOM LIMITED**

Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055

Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 Fax : 23620502 Email : delite@delitekom.com

ISO 9001 DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com